स्मारिका

वर्ष 2024

राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान

नई दिल्ली

स्मारिका

राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान

संपादक मंडल

डॉ. गोपालजी झा
वैज्ञानिक

डॉ. पिंकी अग्रवाल
वैज्ञानिक

डॉ. हस्ती राम
वैज्ञानिक

डॉ. मुकेश कुमार मीना
वैज्ञानिक

श्री सुधीर पटवाल
क्रय एवं भंडार अधिकारी

श्री प्रेम सिंह नेगी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

डॉ. ओम प्रकाश साह
कनिष्ठ हिंदी अनुवाद

विषय सूची

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	संदेश	डॉ. देबाशीस चट्टोपाध्याय	3
2.	एन.आई.पी.जी.आर. का सफ़र...कुछ यादें ...	प्रेम नेगी	4
3.	एनसीपीजीआर से एनआईपीजीआर तक का सफर	डॉ. मोनिका जग्गी	9
4.	सपना जो सच हुआ	डॉ. हस्ती राम	12
5.	मेरी एनआईपीजीआर यात्रा...	डॉ. मंजुल सिंह	13
6.	यादें जो याद आती हैं	डॉ. अदिति गुप्ता	14
7.	कुछ यादें कुछ बातें	डॉ. अर्शीद शेख	15
8.	एनआईपीजीआर...अनुभव से आकार मिला	डॉ. सीमा प्रधान	16
9.	एनआईपीजीआर में ''विज्ञान की खोज''	डॉ. रघु राम बादामी	17
10.	यादों की राह पर एक यात्रा	डॉ. श्वेता झा	18
11.	अंतहीन यात्राः एक वैज्ञानिक की जिज्ञासा से खोज तक की यात्रा	डॉ. तपन कुमार मोहन्ता	19
12.	एनआईपीजीआर..मेरा आत्मविश्वास	सुवाकांता बारिक	20
13.	एनआईपीजीआर में मेरी शोध यात्रा	स्नेहा तिवारी	21
14.	विज्ञान और संचारः भारतीय संस्थानों के विकास की कुंजी	रत्नेश्वर ठाकुर	22
15.	एनआईपीजीआर में मेरे दिन	डॉ. आशुतोष कुमार	25
16.	अल्मा मेटर एनआईपीजीआर	डॉ. मोहन शर्मा	26
17.	एनआईपीजीआर की यादें	डॉ. ज्योतिर्मय मथान	27
18.	एनआईपीजीआर में मेरी यात्रा	डॉ. कृति त्यागी	28
19.	एनआईपीजीआर यादों की गलियारों में	डॉ. जूही भट्टाचार्य	29
20.	प्रिय एनआईपीजीआर	डॉ. विशाल वार्ष्णेय	30
21.	एनआईपीजीआर	डॉ. कुमुद सैनी	32
22.	एनआईपीजीआर से आईआरआरआई तक खोज की जड़ें	फ़राज़ अज़ीम	33
23.	एनआईपीजीआर एक असाधारण कार्यस्थल	रीना अरोड़ा	35
24.	मतदाता जागरूकता	विनोद कुमार शर्मा	37
25.	दोस्ती में	विनोद कुमार शर्मा	38
26.	अनोखा हुनर	रजनी असवाल	39
27.	कृपया थोड़ा चुप हो जाएं	रजनी असवाल	40
28.	In the heart of New Delhi	Dr- Siddhi Jalmi	41

संदेश

राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान, भारत सरकार के बायोटेक्नोलॉजी विभाग की एक स्वायत्त संस्थान है। संस्थान को भारत की स्वतंत्रता की 50 वीं वर्षगांठ और प्रोफेसर (डॉ.) जे.सी. बोस के जन्म दिवस पर स्थापित किया गया था। इसकी औपचारिक घोषणा 30 नवंबर 1997 को की गयी थी। संस्थान पादप आनुवंशिकी (प्लांट जीनोमिक्स) के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। संस्थान जीनोम विश्लेषण और आणविक प्रजनन, विकास, जैविक और अजैविक तनाव के अनुकूलन, होस्ट–पेथोजेन इंटरेक्शन, कम्प्यूटेशनल जीव विज्ञान और न्यूट्रिशनल जीनोमिक्स से संबंधित विषयों पर अनुसंधान में अपने वैज्ञानिकों के माध्यम से सक्रिय है । पादप विज्ञान अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान के लिए हमारे कई संकायों और शोधकर्ताओं को विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठित सम्मान / पुरस्कार और फैलोशिप से सम्मानित किया गया है।

विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करना तथा पादप विज्ञान के कठिनतम विषयों को हिंदी भाषा में प्रस्तुत करना भी संस्थान के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संस्थान द्वारा हिन्दी पत्रिका 'अन्वेषण' का प्रकाशन किया जाता है। यह बताते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस वर्ष हिंदी पत्रिका 'अन्वेषण' का चौथा अंक प्रकाशित किया गया है।

संस्थान के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है कि संस्थान के वैज्ञानिक, कर्मचारी एवं एलुमनाई ने स्मारिका के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है। इस स्मारिका में संस्थान की स्थापना से लेकर वर्तमान तक की यात्रा को बहुत ही आत्मीयता के साथ याद किया गया है।

मैं स्मारिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं अधिकारियों और कर्मचारियों एवं एलुमनाई को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ ।

डॉ. देबाशीस चट्टोपाध्याय
निदेशक (अतिरिक्त प्रभार), रा.पा.जी.अनु.सं.

एन.आई.पी.जी.आर. का सफ़र...कुछ यादें ...

प्रेम नेगी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

मेरी एन.आई.पी.जी.आर. में यात्रा की शुरूआत हुई जब मैंने 15 सितंबर, 1993 को सी.पी.एम.बी., एस.एल.एस., जे.एन.यू जॉइन किया। जे.एन.यू.जैसी प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में काम करने की मुझे बहुत खुशी थी। उस समय सी.पी.एम.बी. की एस.एल. एस., जे.एन.यू. में 4 लैब थी, जिसमें स्वर्गीय प्रोफेसर शिप्रा गुहा मुखर्जी, प्रोफेसर असीस दत्ता, प्रोफेसर सुधीर कुमार सोपोरी, प्रोफेसर कैलाश चन्द उपाध्याय प्रमुख थे ।

प्रोफेसर शिप्रा गुहा मुखर्जी की लैब में डॉ. सुष्मिता, डॉ. संजीव कालिया और स्वर्गीय डॉ. जयन्ती सेन प्रमुख वैज्ञानिक थे। स्वर्गीय श्री सुनील शर्मा लैब में तकनीकी अधिकारी थे और मेरे बहुत अच्छे सहयोगी भी रहे। डॉ. जयन्ती मैडम और श्री सुनील जी से मैने टिशू कल्चर के बारे में बहुत कुछ सीखा, जो कि एक बहुत सुखद अनुभव था।

प्रोफेसर असीस दत्ता की लैब में डॉ. निरंजन चक्रवर्ती, डॉ. शुभ्रा चक्रवर्ती प्रमुख वैज्ञानिक थे। श्री सरजीत सिंह, राजबीर सिंह लैब में तकनीकी अधिकारी, श्री अरबिन्दो दास, बिशु मंडल और महेंदर लैब अटेंडेंट थे और मेरे बहुत ही अच्छे सहयोगी भी रहे।

प्रोफेसर एस.के. सोपोरी की लैब में प्रोफेसर ए.के. शर्मा, डॉ. मीना रानी चंदोक और डॉ. मीनाक्षी मुंशी और डॉ. रेणु देसवाल प्रमुख वैज्ञानिक थे। प्रो. सुधीर कुमार सोपोरी बहुत ही प्रसिद्ध एवं महान वैज्ञानिक हैं, और उनके द्वारा दिया गया ज्ञान मुझे हमेशा याद रहेगा। इसी लैब में, मैं भी तकनीकी अधिकारी के तौर में कार्यरत था और श्री तुल बहादुर थापा लैब अटेंडेंट थे। प्रोफेसर एस. के. सोपोरी की लैब मे, मैंने लैब मैनेजमेंट, टिशू कल्चर और आणविक जीवविज्ञान तकनीकों के बारे में बहुत कुछ सीखा यह मेरे कार्यकाल का एक सुखद अनुभव था। प्रो. सुधीर कुमार सोपोरी ने मुझे, स्वयं और डॉ. मीनाक्षी की पांडुलिपि/मैनुस्क्रिप्ट में एक्नोलेज्मेंट भी दिया अर्थात् क्रिटिकल रिव्यू इन प्लांट साइंसेज (1998).

प्रोफेसर के.सी. उपाध्याय की लैब में डॉ. अपर्णा दीक्षित, डॉ. आई.पी. एस. लाल और डॉ. प्रवीण वर्मा प्रमुख वैज्ञानिक थे। सुश्री कंचन आनंद उस समय तकनीकी अधिकारी थी और श्री पी. के. मिश्रा लैब अटेंडेंट थे और मेरे बहुत ही अच्छे सहयोगी भी रहे। उस समय प्रोजेक्शन कार्य की जिम्मेदारी भी मुझे दी गयी थी। व्याख्यान, कार्यशाला, सम्मेलन (राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय) इत्यादि में ओवरहेड प्रोजेक्टर (ट्रांसपेरेंसी शीट द्वारा),स्लाइड प्रोजेक्टर (स्लाइड द्वारा) और बाद में एलसीडी प्रोजेक्टर/लैपटॉप द्वारा किया जाता था। सी.पी.एम.बी. का क्लास रूम/लेक्चर हॉल छोटा था, इसलिए हमें उपरोक्त कार्यकर्मो में एस.एल.एस., जे.एन.यू के ऑडिटोरियम/कांफ्रेंस हॉल में अपने प्रोजेक्शन उपकरणों को स्थापित करना होता था और कार्यक्रम समाप्ति के बाद सारे उपकरणों को वापिस भी लाना होता था। इन कार्यो में सुबह 8 बजे से देर रात 9 भी बज जाते थे। प्रो.के.सी. उपाध्याय ने इन कार्यो में हमेशा मेरी सहायता की और में इसके लिए उनका आभार

प्रकट करता हूँ। प्रोफेसर के.सी. उपाध्याय संस्थान के विशेष कार्य अधिकारी (ओ.एस.डी.) भी रहे और एन.आई.पी.जी.आर. के निर्माण में उनका विशेष योगदान रहा।

उस समय सी.पी.एम.बी ऑफिस में स्वर्गीय श्री एम.एम.शर्मा (अनुभाग अधिकारी), श्री राजेंद्र रैनाजी (डेटा एंट्री ऑपरेटर) और श्री श्याम बहादुर गुरुंग (अटेंडेंट) सभी लैब्स की पर्चेज, जरुरत सम्बन्धी और प्रशासनिक इत्यादि काम सुचारू रूप से देखते थे।

श्री एम. शर्मा जी के साथ मैने कई कार्यकर्मो जैसे व्याख्यान, सम्मेलन, प्रवेश परीक्षा और कार्यशालायों इत्यादि में काम किया जो कि एक ज्ञानवर्धक अनुभव था। श्री एम शर्मा जी जे.एन.यू. से प्रतिनियुक्ति पर आये थे और वर्ष 2004 में वापस जे.एन.यू चले गये। श्री राजेंद्र रैनाजी जी लगभग 34 वर्षों की लम्बी सेवा प्रदान करने के बाद जून, 2024 को सेवानिवृत हुए। श्री रैनाजी को संस्थान के सभी स्टाफ सदस्यों की ओर से हार्दिक विदाई दी गई। श्री रैना जी का शांत और सहायक स्वभाव मुझे और संस्थान को हमेशा याद रहेगा।

एन.सी.पी.जी.आर. संस्थान की स्थापना भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ और प्रो. (डॉ.) जे. सी. बोस की जन्म जयंती के साथ हुई। इसकी औपचारिक घोषणा 30 नवंबर 1997 को की गई थी। साल 1998 में सी.पी.एम.बी, एस.एल.एस., जेएनयू परिसर से एन.सी.पी.जी.आर. (अंतरिम परिसर), जेएनयू की नई बिल्डिंग में स्थानांतरित हुए।

इसके उपरान्त एन.सी.पी.जी.आर. का भूमि पूजन उस समय के मिनिस्टर ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी श्री एम.एम. जोशी द्वारा 30 नवंबर, 1999 को किया गया। स्वर्गीय श्री पी.एन.शर्मा (सलाहकार) ने बहुत कम कर्मचारियों (स्वर्गीय श्री बी. एन. बगाई, श्री विष्णु नारायण, सुमनजी, रैनाजी इत्यादि) के साथ मिलकर इसको सफल बनाने के लिए दिन–रात एक कर दिया और इसमें मैने भी सहयोग दिया और उनसे मैने बहुत कुछ सीखा।

साल 2001, मैं डॉ. सुदीप चट्टोपाध्याय के ग्रुप में शामिल हुआ और कई महत्वपूर्ण आणविक तकनीकें जैसे डीएनए साउथ वेस्टर्न ब्लॉटिंग (डीएनए–लिगैंड बाइंडिंग स्क्रीनिंग), वेस्टर्न और नॉर्दर्न ब्लॉटिंग, डीएनए, आरएनए आइसोलेशन, लाइगेशन, आर.ई. डाइजेसन, डीएनए इलेकटरोफोरेसिस और एस.डी.एस पेज का उपयोग सीखा और कई ऊतक संवर्धन आदि इत्यादि की भी तकनीकें सीखी। डॉ. सुदीप चट्टोपाध्याय ने मुझे प्रयोगशाला तकनीकों, विशेष रूप से आणविक जीव विज्ञान और उन्नत उपकरणों में प्रशिक्षित किया, यह मेरे लिए जीवन भर का ज्ञान है, और मैं हमेशा उनका आभारी रहूँगा। मुझे दो शोधपत्रों द प्लांट जर्नल (2002) और जेबीसी (2006) में सहलेखक के रूप में नाम मिला, साथ ही डीएनए–लिगैंड बाइंडिंग स्क्रीनिंग तकनीक (लगभग 2.5 लाख प्लैक्स/पट्टिकाएँ) करने के लिए द प्लांट सेल (2005) में भी श्रेय मिला। उस समय किसी भी तकनीकी अधिकारी के लिए उच्च श्रेणी की पत्रिकाओं में नाम दर्ज होना एक अभिभूत करने वाला अनुभव था। मैने बहुत सारे प्रोजेक्ट संभाले और मास्टर ऑफ साइंस के प्रशिक्षु और नए पीएच.डी. स्टूडेंट्स को प्रशिक्षित किया और यह मेरे जीवन का बहुत ही सुखद और ज्ञानवर्धक अनुभव था।

जैसा कि मुझे याद है कि वर्ष 2000–01 में, सी.

पी.एम.बी की लैब 104 में, स्वर्गीय प्रोफेसर सुशील कुमार, डॉ. शशि पाण्डेय राय , डॉ संजय राय, डॉ. सुदीप चट्टोपाध्याय , डॉ. देबाशीस चट्टोपाध्याय, डॉ. सभ्यता भाटिया, डॉ. मनोज प्रसाद, उनके पीएच.डी. छात्र, श्री अरुण कुमार (तकनीकी अधिकारी), तुल बहादुर थापा और लक्ष्मीकांत कांत मान (लैब अटेंडेंट) इतने सदस्य होने के बावजूद सब मिलजुल कर काम करते थे। साल 2002 में, प्रोफेसर सुशील कुमार जी ने एन.आई.पी.जी.आर. चिन्ह (लोगो) के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें मैने डॉ. सभ्यता भाटिया, डॉ. शशि पाण्डेय राय की टीम में रहते हुए प्रथम स्थान पाया और रुपए 500 का पुरस्कार भी मिला। इसके उपरान्त कुछ संशोधन के बाद यह संस्थान का चिन्ह (लोगो) बना और यह अनुभव भी बहुत शानदार था।

डॉ. सुदीप चट्टोपाध्याय 2009 में एन.आई.टी., दुर्गापुर चले गए थे और उस समय छात्रों और परियोजना निधि का ध्यान रखना एक बड़ी जिम्मेदारी बन गई। सभी छात्र और आर.ए. मेरी मदद करते और मूल रूप से हम लैब चलाने के लिए एक–दूसरे की मदद करते थे । इस दौरान मुझे एन.आई.पी. जी.आर. में एक कठिन और चुनौतीपूर्ण भूमिका का अनुभव हुआ था। डॉ. सुदीप चट्टोपाध्याय की लैब में पीएच.डी. छात्र रहे डॉ. हस्ती राम आज हमारे संस्थान में स्टाफ वैज्ञानिक के पद में कार्यरत है, जो मन में प्रसन्नता भर देता है।

एन.आई.पी.जी.आर. के संस्थापक और प्रथम निदेशक प्रोफेसर असीस दत्ता के अथक प्रयास और सशक्त नेतृत्व में, साल 2004 में एन.आई.पी. जी.आर. के नए बिल्डिंग का निर्माण कार्य पूरा हुआ था। नवंबर 2004 में एन.सी.पी.जी.आर., जे.एन.यू. परिसर से एन.आई.पी.जी.आर. के नए परिसर में स्थानांतरित करना था । सभी प्रयोगशाला और फैसिलिटी को नए परिसर में स्थापित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। यह काम सबकी मेहनत से पूरा हुआ। मुझे याद है कि, अरेबिडोप्सिस ग्रोथ रूम (डॉ. सुदीप चट्टोपाध्याय) को विघटित करके पैक करना, पौधों को बचाना तथा नए परिसर में स्थानांतरित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था और इस कार्य को हमने उसी दिन पूरा कर लिया। इसी तरीके से हमने सब मशीनों को स्थानातरित कर उन्हें कार्यात्मक किया।

फिर वह स्वर्णिम समय आया जब 28 नवंबर, 2005 को माननीय राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम जी के द्वारा एन.आई.पी.जी.आर. (पूर्व में एन.सी.पी.जी.आर.) का उद्घाटन किया गया। इस समारोहो में, मिनिस्टर ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी श्री कपिल सिबल जी, पूर्व सेक्रेटरी डी. बी.टी. स्वर्गीय डॉ. एम.के. भान और संस्थान के संस्थापक निदेशक श्री प्रोफेसर असीस दत्ता भी उपस्थित थे। इस समारोहो को संस्थान के सभी सदस्यों ने मिलकर सफल बनाया।

साल 2012 में, मैं एम.ए.एफ./एस.पी.आर. सुविधा/फैसिलिटी में स्थानांतरित हुआ और पी.जी.एफ. का अतिरिक्त कार्यभार संभाला। लैब से सुविधा/फैसिलिटी में आने पर मुझे काफी समय तक जिज्ञासा और उत्साह दोनों का अनुभव रहा। लेकिन समय के साथ धीरे–धीरे मैंने दोनों सुविधाओं की तकनीकें सीख लीं और यह मेरे जीवन का हिस्सा बन गयी। अभी में एम.ए.एफ./ एस.पी.आर. सुविधा, हिंदी समिति और ए.पी.वी.सी. समिति इत्यादि के काम सम्भाल रहा हूँ।

साल 2018 में आई. आई.एस.एफ, लखनऊ और 2022 में मेगा साइंस एंड टेक्नोलॉजी डे,

जवाहरलाल नेहरु स्टेडियम, नई दिल्ली में सम्मिलित होना और अपने संस्थान के वैज्ञानिको के उत्कृष्ट कार्यो को पोस्टर और स्पेसिमेन द्वारा दर्शाना एक अभूतपूर्व अनुभव था।

आई.आई.एस.एफ.– लखनऊ, 2018 का चित्र

एन.आई.पी.जी.आर. मेरे लिए एक परिवार की तरह है। एन.आई.पी.जी.आर. की इस यात्रा में, मैं संस्थान के पूर्व और वर्तमान निदेशक, सभी सम्मानित वैज्ञानिकों, संस्थान के विभिन्न कार्यालय/लैब/फैसिलिटी के सदस्यों और छात्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने हमेशा मेरी मदद की और कठिन परिस्थितियों में मेरे साथ खड़े रहे। मेरा 31 साल का सी.पी.एम.बी से एन.सी.पी.जी.आर (अंतरिम परिसर) और आखिर में एन.आई.पी.जी.आर. का सफर बहुत ही उत्साह से भरा हुआ रहा और यह यादें जिंदगी भर मेरे साथ रहेंगी।

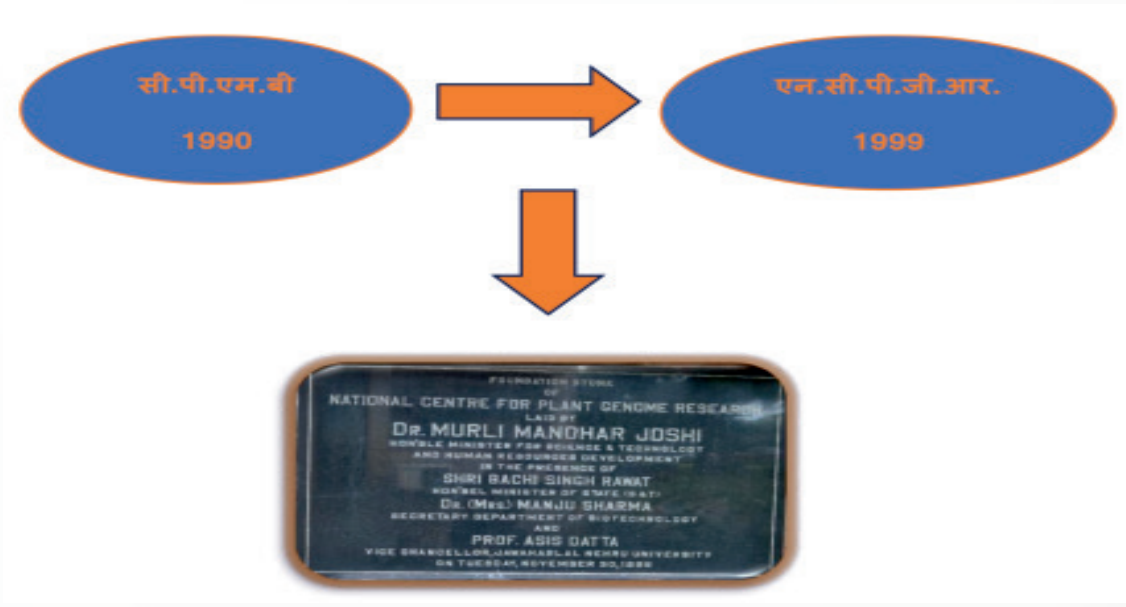

(बाएँ से दायें) 28 नवंबर, 2005 को माननीय राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के द्वारा एन.आई.पी.जी.आर. का उद्घाटन, डी.बी.टी. के पूर्व सेक्रेटरी स्वर्गीय डॉ. एम. के. भान और साथ में एनआईपीजीआर के संस्थापक और प्रथम निदेशक प्रोफेसर असीस दत्ता

एनसीपीजीआर से एनआईपीजीआर तक का सफर

डॉ. मोनिका जग्गी (पीएच.डी. बैच 2004)
प्रमुख वैज्ञानिक
सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान
(सीएसआईआर–एनआईएससीपीआर), नई दिल्ली

वर्ष 2004 में राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान (एनआईपीजीआर) में कदम रखना, जो उस समय एनसीपीजीआर (राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान केन्द्र) के नाम से जाना जाता था, वैज्ञानिक अनुसंधान में मेरी यात्रा की शुरुआत थी। जेएनयू परिसर के शांत परिवेश में बसा यह संस्थान शैक्षणिक आकर्षण का एक अलग ही माहौल देता था। उन दिनों की यादें आज भी ताजा हैं, खासकर वह इमारत जिसमें अब एडवांस्ड इंस्ट्रूमेंटेशन रिसर्च फैसिलिटी है।

[बाएं से दाएं: सुनील कुमार, डॉ. जयंती सेन, संतोष कुमार, शोभाराम वाल्मीकि, अजस्वरता दत्ता, सुशील कुमार रैना, मोनिका जग्गी, ज्योति बत्रा]

स्वर्गीय डॉ. जयंती सेन के मार्गदर्शन में, मैंने अनुशासन, धैर्य और अटूट समर्पण से भरे मार्ग पर कदम रखा। डॉ. सेन एक मेहनती वैज्ञानिक थी और विज्ञान के प्रति समर्पित थी, उन्होंने मुझमें ऐसे बहुमूल्य गुणों का संचार किया, जिनसे मेरे वैज्ञानिक चरित्र का निर्माण हुआ। वह समानता में विश्वास रखती थी और इस बात पर जोर देती थी कि वरिष्ठों को औपचारिक उपाधियों के बजाय उनके नाम से संबोधित किया जाना चाहिए – यह एक ऐसा कदम था जिससे सौहार्द और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा मिलता था। विज्ञान के प्रति उनका अटूट जुनून और अपने छात्रों के प्रति उनकी असीम प्रतिबद्धता प्रेरणादायक थी, जिसने उन्हें कैंसर से जूझने के बावजूद अपने अंतिम दिनों तक प्रयोगशाला के काम में डूबे रहने के लिए प्रेरित किया। उनकी अनुपस्थिति में भी, डॉ. सेन की विरासत जीवित है, जो विज्ञान के प्रति उनके समर्पण का प्रमाण है।

[बाएं से दाएं: संतोष कुमार, अजस्वरता दत्ता, ज्योति बत्रा, निरोज कुमार सेठी, सुशील कुमार रैना, के. प्रभाकर राव, धम्मप्रकाश वानखेड़े, डॉ. जयंती सेन]

पुरानी इमारत हमारे लिए दूसरे घर की तरह थी, जहाँ टीमवर्क बहुत जरूरी था। प्रत्येक वर्ष, सभी शोधकर्ता अपनी प्रयोगशाला की सफाई करने के लिए एकजुट होते थे, जिसके बाद एक बड़े रात्रिभोज का आयोजन किया जाता था। संस्थान के सभी लोग जन्मदिन और शोध पत्र स्वीकृति समारोह में शामिल होते थे। नए भवन में जाने के बाद भी हमने इन परंपराओं को जारी रखा, जिससे हमारे वैज्ञानिक लक्ष्यों की दिशा में काम करते हुए बनाए गए मजबूत संबंध जीवित रहे।

डॉ. आलोक सिन्हा के मार्गदर्शन में काम करना मेरी शोध यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। अपने छात्रों के प्रति उनके अटूट समर्थन और विश्वास ने स्वायत्तता और सशक्तिकरण के माहौल को बढ़ावा दिया। मैं उनके मार्गदर्शन के लिए बहुत आभारी हूँ।

[बाएं से दाएं: डॉ. जयंती सेन, डॉ. सभ्यता भाटिया, डॉ. आलोक कृष्ण सिन्हा, डॉ. मनोज प्रसाद]

मैं बिना किसी संदेह के कह सकती हूँ कि एनआईपीजीआर में मेरा समय शानदार था। हमारे पास अद्भुत सुविधाएं, उच्च कोटि की प्रयोगशालाएं और वरिष्ठ लोग थे जिन्होंने हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। इसके अलावा, मेरे लैबमेट हमेशा मदद के लिए तैयार रहते थे। एनआईपीजीआर में अपनी यात्रा पर विचार करते हुए, मैं समृद्ध अनुभवों और वहां से प्राप्त अमूल्य सबक के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। जिज्ञासा से प्रेरित और ज्ञान की सामूहिक खोज से प्रेरित एक जीवंत वैज्ञानिक समुदाय का हिस्सा बनना एक सौभाग्य की बात थी।

अंत में, मैं भावी वैज्ञानिकों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ तथा उनसे आग्रह करती हूँ कि वे हर अवसर का लाभ उठाएं, नैतिक मानदंडों को बनाए रखें तथा वैज्ञानिक उत्कृष्टता की खोज में पूरे मनोयोग से जुट जाएं। एनआईपीजीआर के गलियारे उत्साही शोधकर्ताओं के कदमों से गूंजते रहें, जिनमें से प्रत्येक वैज्ञानिक खोज के क्षेत्र में अपनी अनूठी छाप छोड़ता रहे।

सपना जो सच हुआ...

डॉ. हस्ती राम (पीएच.डी. बैच 2007)
वैज्ञानिक
एनआईपीजीआर

एनआईपीजीआर में पीएच.डी. करने से पहले मुझे इसके बारे में नहीं पता था। हालाँकि, मुझे एनबीपीजीआर की प्रतिष्ठा के बारे में पता था, और मैंने सोचा कि एनआईपीजीआर शायद एनबीपीजीआर की एक शाखा हो सकती है, और मैंने अपनी पीएच.डी. ज्वाइन कर ली। मैं प्रोफेसर आशीष दत्ता की लैब में शामिल होना चाहता था क्योंकि उन्हें पद्म श्री और पद्म भूषण पुरस्कार मिला था, हालाँकि मैं प्रोफेसर सुदीप चट्टोपाध्याय की लैब में शामिल हो गया, जो संस्थान की सबसे प्रतिष्ठित लैब थी। मुझे लैब में अपना पहला दिन अच्छी तरह याद है, जब चंद्रू सर (लैब के वरिष्ठ जिनके काम को मैंने आगे बढ़ाया) ने मुझे उनके साथ अरेबिडोप्सिस ऊतकों से कुल प्रोटीन निष्कर्षण करने के लिए कहा था। नेगी जी (लैब में STO) हमें उपकरण हैंडलिंग के बारे में सिखाते थे। मुझे याद है कि मैंने नेगी जी से कहा था कि मेरे पास सैद्धांतिक ज्ञान है लेकिन मेरे पास मास्टर्स के दौरान विभिन्न उपकरणों का उपयोग करने का व्यावहारिक अनुभव नहीं है, और उन्होंने मुझे सभी तकनीकों को सीखने में मदद की। मेरे पीएच.डी. के सबसे यादगार दिनों में से एक वह दिन था जब सुदीप सर ने लैब मीटिंग में यह घोषणा की कि वह एनआईपीजीआर छोड़कर एन आई टी दुर्गापुर में शामिल होने जा रहे हैं। कमरे में एकदम सन्नाटा था। सिर्फ सर बोल रहे थे और कोई कुछ नहीं बोल पा रहा था। हर कोई उदास था। पीएच.डी. की यात्रा वाकई रोमांचक थी, जिसमें बहुत सारे उतार–चढ़ाव थे। उन दिनों मैं क्रिकेट खेलने में बहुत ज्यादा मशगूल था। मैं हर रोज शाम 5 बजे क्रिकेट के मैदान पर पहुँचने वाला पहला व्यक्ति होता था और बाकी सभी खिलाड़ियों को मैदान पर बुलाता था। यह मैदान पहले एक ऐसी जगह हुआ करता था जहाँ अब नई लैब विंग बनी है। 15 अगस्त/26 जनवरी को फैकल्टी और छात्रों के बीच क्रिकेट मैच हुआ करता था। उस समय लगभग 70 साल के प्रोफेसर सुशील कुमार द्वारा लिया गया कैच सभी के लिए सबसे यादगार पलों में से एक था। पीएच.डी. की यात्रा के बारे में बात करने के लिए बहुत सी बातें हैं और मैं उनमें से हर एक को संजो कर रखता हूँ।

एनआईपीजीआर में वैज्ञानिक का पद पाना मेरा सपना था और यह मेरे पीएच.डी. पूरी होने के 8 साल बाद 2020 में सच हुआ। एक वैज्ञानिक के रूप में वहाँ आना और चलना बहुत खास एहसास रहा जहाँ आपने एक छात्र के रूप में काम किया। एक तरफ यह छात्र होने जैसा लगता है, दूसरी तरफ यह ज्यादा जिम्मेदारी वाला भी लगता है। मैं बहुत विनम्र महसूस कर रहा हूँ और एनआईपीजीआर में अपने पीएच.डी. अनुभव के साथ–साथ अपने पोस्टडॉक्टोरल अनुभव का उपयोग करते हुए, मैं उन कार्यों को करने का लक्ष्य रखता हूँ जो समाज और देश के लिए उपयोगी होंगे।

मेरी एनआईपीजीआर यात्रा

डॉ. मंजुल सिंह (पीएच.डी. बैच 2008)
डीबीटी–रामलिंगस्वामी फेलो,
सीएसआईआर–एनबीआरआई, लखनऊ

मेरा अल्मा मेटर होने के नाते, एनआईपीजीआर मेरी शोध यात्रा का सबसे यादगार हिस्सा रहा है। मुझे वहां महान मार्गदर्शकों, उत्कृष्ट सहकर्मियों और उत्कृष्ट वरिष्ठों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे याद है कि मैं एनआईपीजीआर में नवनिर्मित छात्रावास का पहला निवासी था। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले मेरे सभी सहकर्मी काफी जिज्ञासा और असमंजस से भरे हुए थे, और हम सभी बहुत जल्दी एक–दूसरे से घुल–मिल गए। मुझे दहिया जी के कैंटीन में सत्तू पराठा और चाय पर बातचीत करते हुए बिताया गया समय खास तौर पर याद है। ब्रह्मपुत्र हॉस्टल में हम अपने सीनियर्स और सहकर्मियों के साथ देर रात चाय और मैगी का लुत्फ उठाते थे। हर साल हम डॉ. प्रवीण वर्मा सर के मार्गदर्शन और प्रबंधन में एक शानदार कार्यक्रम साइ–इफ्लक्स का आयोजन करते थे, जिसमें विज्ञान से लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम तक सब कुछ शामिल होता था। पहली हॉस्टल नाइट (पल्लवन) मौज–मस्ती और यादों से भरी थी, यह वह समय था जब हम वरिष्ठों और सहकर्मियों के साथ घुलमिल गए थे। हमारी प्रयोगशालाएं और छात्रावास एक ही परिसर में होने के कारण हमारा जीवन बहुत आरामदायक था और पूरा एनआईपीजीआर समुदाय इतना स्नेही था कि हमें कभी अकेलापन महसूस नहीं हुआ। लैब 203 मेरे लिए हमेशा एक खुशहाल जगह रहेगी, इस लैब को तीन वैज्ञानिकों डॉ. एश्वर्या लक्ष्मी (मेरी गुरु), डॉ. नवीन बिष्ट और डॉ. मनोज माजी ने साझा किया था। लैब के सभी सदस्य एक बड़े परिवार की तरह थे, क्योंकि हम पिकनिक, त्यौहार और जन्मदिन का जश्न एक साथ मनाते थे। मैंने लैब203 में संसाधनों को साझा करने और विज्ञान पर चर्चा करने की संस्कृति विकसित की। एनआईपीजीआर वह आधार है जिसने मुझे विज्ञान में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, मुझे लगता है कि इसने हमारे दिमाग में एक बेंचमार्क स्थापित किया है कि शोध का माहौल कैसा होना चाहिए। मुझे खुशी और गर्व है कि हम एनआईपीजीआर के 25 गौरवशाली वर्ष मना रहे हैं, और मैं प्रशिक्षु से लेकर पी.एच.डी. और फिर पोस्टडॉक्टरेट तक, कुल 9 वर्षों तक इस यात्रा का हिस्सा रहा हूँ। मैं भारत और दुनिया भर में उत्कृष्ट पादप विज्ञान अनुसंधान का प्रतीक बनने के लिए एनआईपीजीआर परिवार को शुभकामनाएं देता हूँ।

यादें जो याद आती हैं

डॉ. अदिति गुप्ता (पीएच.डी. बैच 2008)
वरिष्ठ वैज्ञानिक
सीएसआईआर–एनबीआरआई, लखनऊ

जब मैं राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान (एनआईपीजीआर) में बिताए अपने समय को याद करती हूँ, तो मैं गहरी कृतज्ञता और पुरानी यादों से भर जाती हूँ। एनआईपीजीआर में मेरी यात्रा जनवरी 2008 में डॉ. प्रवीण वर्मा की प्रयोगशाला में एम.एससी. इंटर्न के रूप में शुरू हुई और डॉ. ऐश्वर्या लक्ष्मी के मार्गदर्शन में पीएच.डी. शोधार्थी के रूप में जारी रही। मैंने एनआईपीजीआर में लगभग आठ यादगार वर्ष बिताए, इस दौरान मैं एक शोधार्थी और एक बेहतर इंसान के रूप में विकसित हुई।

डॉ. एश्वर्या लक्ष्मी का मार्गदर्शन और लैब 203 का माहौल मेरे शैक्षणिक और प्रोफेशनल विकास में महत्वपूर्ण था। हम डॉ. मनोज माजी और डॉ. नवीन बिष्ट के मार्गदर्शन के लिए भी बहुत भाग्यशाली थे, बेशक उनके शोध दल हमारे अच्छे पड़ोसी थे जो एक बोनस था! सभी विषम समय के प्रयोग, डेटा विश्लेषण, शोध निष्कर्षों पर अनेकों चर्चाएँ, असफलताएँ और बहुत कुछ, मेरे शोध यात्रा के अभिन्न अंग थे, और इसी प्रकार सभी लैब पिकनिक, जन्मदिन समारोह, त्योहार, दोपहर के भोजन और सैर–सपाटे भी!! एनआईपीजीआर परिसर में छात्रावास के पहले निवासियों में से एक होने के नाते, मुझे हमारी समुदाय को शुरू से बढ़ते हुए देखने का भी अवसर मिला। छात्रावास की रातें (पल्लवन), सरस्वती पूजा, वार्षिक छात्र उत्सव साइइफ्लक्स, एनआईपीजीआर के सभी शिक्षकों, वरिष्ठों, बैचमेट्स और जूनियर्स के साथ मेरी कुछ सबसे प्यारी यादें हैं। एनआईपीजीआर में प्राप्त प्रशिक्षण और अनुभव ने वास्तव में मेरे शोध आधार को मजबूत किया और मुझे अपने स्वयं के शोध समूह का नेतृत्व करने की चुनौतियों के लिए तैयार किया। आज, सीएसआईआर–एनबीआरआई, लखनऊ में एक वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में, मैं अक्सर इन सीखों पर विचार करती हूँ और एनआईपीजीआर में मुझे जो सहयोगात्मक भावना का अनुभव हुआ, उसे संजो कर रखती हूँ। जैसा कि हम एनआईपीजीआर की रजत जयंती मना रहे हैं, मैं गर्व और खुशी महसूस कर रही हूँ। मैं इस उल्लेखनीय यात्रा का हिस्सा बनने के अवसर के लिए आभारी हूँ और संस्थान की निरंतर सफलता और वैज्ञानिक समुदाय में योगदान की आशा करती हूँ।

कुछ यादें कुछ बातें

डॉ. अर्शीद शेख (पीएच.डी. बैच 2009)
रिसर्च साइंटिस्ट केएयूएसटी, सऊदी अरब
सहायक प्रोफेसर यूट्रेक्ट विश्वविद्यालय, नीदरलैंड

विदेश में रहने के दौरान, एनआईपीजीआर में मेरे नए स्मार्टफोन वाला एक पार्सल पहुंचा, जिससे मेरे मित्र बहुत खुश हुए। दूर होने के बावजूद, उनकी आत्मीयता ने मेरे दरवाजे तक घर का एक टुकड़ा ला दिया। मैं उस खुशी भरे माहौल को अच्छी तरह से याद कर सकता हूँ जब वे उत्सुकता से डिवाइस को खोल रहे थे, उनकी हँसी हमारे शोध संस्थान के परिचित हॉल में गूँज रही थी। उन्होंने मेरे साथ जो तस्वीरें साझा कीं, उनके जरिए मुझे उस जगह से तुरंत जुड़ाव महसूस हुआ जिसने इतनी सारी यादों को ताजा कर दिया था। कैमरे में कैद उन क्षणों में, मैं उस सौहार्द और गर्मजोशी को महसूस कर सकता था जो हमारे साथ बिताए गए समय को परिभाषित करती थी। ये सरल किन्तु गहन भाव मुझे एनआईपीजीआर की दीवारों के भीतर बने उन स्थायी बंधनों की याद दिलाते हैं, जो भौगोलिक सीमाओं को पार करते हैं तथा मीलों की दूरी के बावजूद हमारी आत्माओं को एक दूसरे से जोड़े रखते हैं। मुझे एनआईपीजीआर में साथ बिताए गए वे सरल, मजेदार लेकिन खूबसूरत पल याद आते हैं।

फोटो में बाएं से दाएं डॉ. रघु राम, डॉ. विजय वर्धन, डॉ. कमलेश साहू

एनआईपीजीआर... अनुभव से आकार मिला

डॉ. सीमा प्रधान (पीएच.डी. बैच 2009)
वैज्ञानिक
इंस्टीट्यूट ऑफ लाइफ साइंसेज, भुवनेश्वर

मैं लगभग सात वर्षों (सितंबर 2009 से जून 2016) तक एनआईपीजीआर में रही, जहां मैंने डॉ. सभ्यता भाटिया की देखरेख में अपनी पीएच.डी. की डिग्री पूरी की। हर पीएच.डी. यात्रा की तरह, मेरी यात्रा में भी उतार–चढ़ाव आए। लेकिन मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानती हूँ कि इस दौरान मुझे जो अनुभव मिला, उसने शोध में मेरे भविष्य को आकार दिया। मैंने हमेशा यह माना है कि पीएच. डी. का उद्देश्य विभिन्न तरीकों से हमारी क्षमताओं का परीक्षण करना है, तथा यह हमें अपनी स्वयं की प्रेरणा को खोजने के लिए प्रेरित करता है, तथा यह भी कि क्या हम अनुसंधान के प्रति इतना प्रेम रखते हैं कि स्वयं को इस कठिन प्रक्रिया से गुजरने के लिए तैयार कर सकें। मुझे लगता है कि एनआईपीजीआर मेरी ट्रेनिंग के लिए सबसे अच्छा प्लेटफार्म था। संस्थान के पास देश में सबसे अच्छी तरह से सुसज्जित सीआईएफ है और इसे रणनीतिक रूप से अनुसंधान गतिविधियों के केंद्र में रखा गया है। मैं उन लोगों के प्रति आभारी हूँ जिनसे मैं एनआईपीजीआर में मिली। जब भी मुझे मदद की जरूरत पड़ी, मुझे हमेशा मदद करने वाले हाथ मिले, चाहे वह सलाह के लिए हो, रसायनों के लिए हो। मैंने ऐसे लोगों से मित्रता स्थापित की है, जो मेरे जीवन के सबसे कठिन समय में भी मेरा साथ देते रहे हैं और आज भी देते हैं। रश्मि मैम, वानखेड़े सर, कामाक्षी, विजय, अन्नपूर्णा, चंद्र कांत, सुबोध, सिद्धि, प्रकाश और कई अन्य लोगों ने अपनी उपस्थिति से मेरे जीवन को समृद्ध बनाया है। मुझे एनआईपीजीआर में बिताए अनगिनत लंच, लैब पार्टियाँ और जीवन की घटनाएँ याद हैं। मेरे लिए यह सौभाग्य की बात थी कि मैं ऐसे सहायक और अच्छे स्वभाव वाले लोगों का साथ मिला जो जरूरत पड़ने पर मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार रहते थे। डॉ. आलोक सिन्हा ने बहुत धैर्यपूर्वक समझाया कि प्रकाशन–गुणवत्ता वाले आंकड़े कैसे विकसित किए जाएँ। डॉ. मनोज प्रसाद ने पीएच. डी. के बाद नौकरी के शुरुआती वर्षों में मेरी मदद करने के लिए बहुत ही कम समय में (एक घंटे के भीतर) चरित्र प्रमाण पत्र भेज दिया। यह डॉ. सभ्यता भाटिया की दूरदर्शिता ही थी जिन्होंने मुझे एनजीएस और जैव सूचना विज्ञान के क्षेत्रों में अपनी विश्लेषणात्मक क्षमताओं का विस्तार करने की अनुमति दी। मुझे सभी संकाय सदस्यों और कार्यालय कर्मचारियों का प्रोत्साहन और सहयोग याद है तथा मैं उन सभी लोगो को धन्यवाद देना चाहती हूँ। सौभाग्य से मुझे एनआईपीजीआर में विनम्रता और सहानुभूति ये दोनों गुण मिले। मैं आज जहां भी हूँ, वह मेरे जीवन में अब तक घटित हुई सभी घटनाओं का परिणाम है और एनआईपीजीआर इसका एक बड़ा हिस्सा रहा है और हमेशा रहेगा। मैं सभी वर्तमान शोधार्थियों को उनके सभी प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देती हूँ और आशा करती हूं कि वे मेरे अल्मा मेटर में अपने अनुभवों से जितना संभव हो उतना लाभ प्राप्त करेंगे।

एनआईपीजीआर में "विज्ञान की खोज"

डॉ. रघु राम बादामी (पीएच.डी. बैच 2009)
मैरी क्यूरी फेलो, यूनिवर्सिटी कॉलेज कॉर्क, आयरलैंड

मुझे एनआईपीजीआर एलुमनाई एसोसिएशन का हिस्सा बनकर खुशी हो रही है। मैंने 2009–2015 के दौरान एनआईपीजीआर में पीएच.डी. की है। एनआईपीजीआर में काम करने का मेरा अनुभव विज्ञान और उससे आगे की सोच को आकार देने में सहायक रहा है। संक्षेप में, एनआईपीजीआर में लगभग 6 वर्षों तक सक्रिय रूप में कार्य करना, आगामी वर्षों में मेरी प्रत्येक सफलता के लिए महत्वपूर्ण था। भारत के बाहर चार अलग–अलग देशों में काम करने का अनुभव प्राप्त करने के बाद, मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि एनआईपीजीआर जैसी जीवंत वैज्ञानिक संस्कृति शायद ही कहीं मिलेगी। लगातार होने वाले वैज्ञानिक व्याख्यान, समूह चर्चाएं, कार्यक्रम और सहकर्मियों के बीच अनौपचारिक बातचीत (चाय के दौरान) सभी मुख्यतः विज्ञान पर ही केंद्रित थे, जो अन्य स्थानों पर मिलना दुर्लभ है। सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि एनआईपीजीआर में 'विज्ञान की खोज' को 'जीवन पद्धति' के रूप में माना जाता है, जबकि इसके विपरीत विभिन्न स्थानों पर जहां मैं गया हूँ, वहां इसे "सिर्फ एक नौकरी" के रूप में माना जाता है। यह अद्भुत है कि एनआईपीजीआर के पास उन्नत इन्फ्रास्ट्रक्चर है, लेकिन वह कभी इसका बखान नहीं करता। इन सभी का मेरी वैज्ञानिक खोज पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा और विज्ञान के प्रति मेरे जुनून को बढ़ावा मिला। मैं वैज्ञानिक करियर को आगे बढ़ाने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एनआईपीजीआर को छोड़कर किसी भी बेहतर जगह के बारे में नहीं सोच सकता। मुझे अपना अनुभव साझा करने का मौका देने के लिए धन्यवाद।

एनआईपीजीआर... अनुभव से आकार मिला

डॉ. श्वेता झा (पोस्ट डॉक्. बैच 2011)
सहायक प्रोफेसर (बॉटनी),
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

एनआईपीजीआर के भूतपूर्व पूर्व छात्र के रूप में इस प्रतिष्ठित संस्थान में अपने कार्यकाल के दौरान अपने अनुभवों को साझा करने में खुशी महसूस हो रही है। मैंने 2011 में पोस्ट–डॉक फेलो के रूप में डॉ. जितेन्द्र गिरि की प्रयोगशाला जॉइन किया था। एनआईपीजीआर में बिताए गए वर्ष मेरे लिए परिवर्तनकारी रहे, जिन्होंने न केवल मेरे शोध और प्रोफेशनल प्रगति को आकार दिया, बल्कि मेरे व्यक्तिगत विकास और प्रगति में भी योगदान दिया। एनआईपीजीआर में अपने कार्यकाल के दौरान, मैं परिसर के सुंदर जीवंत वातावरण में घिरी रही, मेरे चारों ओर प्रतिभाशाली लोग और समर्पित मार्गदर्शक थे, जिन्होंने मुझे अपनी ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करते रहें। संस्थान में अनुसंधान के लिए अपनाए गए बहुविषयक दृष्टिकोण ने मुझे अध्ययन के विविध क्षेत्रों का पता लगाने और जटिल मुद्दों की समग्र समझ विकसित करने में सक्षम बनाया। एनआईपीजीआर में मेरे अनुभव का सबसे मूल्यवान पहलू यह था कि मुझे ऐसे शोध परियोजनाओं में शामिल होने का अवसर मिला, जिनका वास्तविक दुनिया पर प्रभाव पड़ा। इन अनुभवों ने न केवल मुझे आवश्यक कौशल प्रदान किये, बल्कि समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए मुझमें उद्देश्य और प्रतिबद्धता की गहरी भावना भी पैदा की। विभिन्न पृष्ठभूमियों और संस्कृतियों के साथियों के साथ बने बंधन, और अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों के साझा क्षण ऐसे हैं जिन्हें मैंने संजो कर रखा है। मुझे देर रात तक किए गए उन प्रयोगों की बहुत याद आती है, जिनसे न केवल मेरा नजरिया व्यापक हुआ, बल्कि मेरा समग्र अनुभव भी समृद्ध हुआ।

मुझे एनआईपीजीआर में अर्जित ज्ञान और कौशल को अपने विश्वविद्यालय में अपने क्षेत्र की कुछ सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने के लिए लागू करने का सौभाग्य मिला है। चाहे वह अभूतपूर्व अनुसंधान करना हो, नवीन परियोजनाओं का नेतृत्व करना हो, या अगली पीढ़ी के स्कॉलर को मार्गदर्शन देना हो, मुझे एनआईपीजीआर में प्राप्त अनुभव निरंतर याद आते रहते हैं। मैं संकाय के अटूट मार्गदर्शन, विशेष रूप से प्रो. अखिलेश त्यागी, डॉ. गिरी, डॉ. आलोक सिन्हा, डॉ. जितेंद्र ठाकुर, और मेरे साथी सहकर्मियों पूनम, बिपिन, मीनाक्षी और कई अन्य लोगों के प्यार और सहयोग के लिए आभारी हूँ। उनकी सलाह, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन ने मेरे मार्ग को आकार देने और अकादमिक क्षेत्र से परे दुनिया की जटिलताओं को समझने में मेरी मदद की है। मुझे एनआईपीजीआर समुदाय का हिस्सा बनने और उत्कृष्टता, नवाचार और सेवा की इसकी विरासत को आगे बढ़ाने पर बहुत गर्व है। मैं एनआईपीजीआर में अपने प्रवास के दौरान मुझमें जो मूल्य स्थापित हुए, उनसे प्रेरित होकर ज्ञान के विकास और समाज की बेहतरी में योगदान देना जारी रखने की आशा करती हूँ।

अंतहीन यात्राः एक वैज्ञानिक की जिज्ञासा से खोज तक की यात्रा

डॉ. तपन कुमार मोहन्ता (पोस्ट डॉक् बैच 2012)
निजवा विश्वविद्यालय, निजवा, ओमान में शोधकर्ता

हम सभी जानते हैं कि जो व्यक्ति विज्ञान में अपना करियर बनाता है या जो विज्ञान में काम करता है उसे "वैज्ञानिक" के रूप में जाना जाता है। तो, वैज्ञानिक की पारंपरिक परिभाषा क्या है? वैज्ञानिक वह व्यक्ति होता है "जो चीजों को वैसे ही जानता है जैसे वे हैं" या वह व्यक्ति जिसे विषय–वस्तु का गहन ज्ञान होता है। सीखने की सतत प्रक्रिया ज्ञान को गहराई तक पहुंचाती रहती है। जीवन के निरन्तर बदलते पन्नों में कथा का एक धागा हम सबको ज्ञान और अनुभव के दायरे में बांधता है। एनआईपीजीआर एक ऐसा महान संस्थान है जिसने मेरी शिक्षा में योगदान दिया है और मैं अपने वैज्ञानिक करियर में इसके योगदान के लिए ऋणी हूँ। मेरी यात्रा एनआईपीजीआर में युवावस्था की मासूमियत, दुनिया की जटिलताओं से अछूते मन के साथ शुरू हुई, जहां जिज्ञासा के बीज बोए गए और ज्ञान की प्यास प्रज्वलित हुई। एनआईपीजीआर में अनुभव के साथ ज्ञान का एकीकरण, आत्मनिरीक्षण, सहानुभूति और अंधेरी रातों में मार्गदर्शन करने वाले प्रकाश से युक्त, सत्य और समझ की ओर मार्ग को प्रकाशित करना, मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण समय था। विशेष रूप से, मैं एनआईपीजीआर के अपने पोस्टडॉक पर्यवेक्षक डॉ. आलोक कृष्ण सिन्हा का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे उनके साथ काम करने का अवसर दिया और मेरे करियर के लिए वैज्ञानिक बुद्धि का एक मजबूत आधार प्रदान किया। प्रतिष्ठित संस्थान एनआईपीजीआर के पूर्व छात्र के रूप में, हम असीम संभावनाओं के मुहाने पर खड़े हैं, उन मील के पत्थरों की ओर देख रहे हैं जिन्हें हमने पार किया है और उन क्षितिजों की ओर देख रहे हैं जिन्हें अभी खोजा जाना है।

पूर्व छात्रों के रूप में, हम ज्ञान की मशाल लेकर चलते हैं, जो एक हाथ से दूसरे हाथ और पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती रहती है। हालाँकि, इस विशेषाधिकार के साथ एक बड़ी जिम्मेदारी भी जुड़ी है कि हम अपने ज्ञान का उपयोग व्यक्तिगत लाभ के लिए न करें, बल्कि मानवता की भलाई के लिए करें। हालांकि, वैज्ञानिक का मार्ग चुनौतियों के बिना अधूरा है। हर सफलता के लिए, अनगिनत असफलताएँ और संदेह के क्षण आते हैं, और कभी–कभी, आगे का रास्ता अंधकारमय और धुंधला दिखता है। यह प्रतिकूल क्षण वैज्ञानिक की वास्तविकता का परीक्षण करता है और जहां दृढ़ता की कसौटी पर अपने आप को गढ़ते हैं। एक पूर्व छात्र के रूप में, मैं ज्ञान की खोज में एनआईपीजीआर में बिताए गए समय से सीखे गए सबक और प्राप्त ज्ञान को अपने साथ रखता हूँ। लेकिन इससे भी बढ़कर, मैं इस संस्थान द्वारा मुझे दिए गए अवसरों के लिए बहुत आभारी हूँ, जिसमें खोज करने, सवाल करने और खोज करने का अवसर शामिल है। पूर्व छात्रों के रूप में, हम एक साझा लक्ष्य की सामूहिक खोज से एक साथ बंधे हैं। यद्यपि हमारे रास्ते अलग–अलग हो सकते हैं और हम विश्व के अलग–अलग कोनों में रह सकते हैं, फिर भी हम हमेशा अपने संस्थान से जुड़े रहेंगे, जो अनंत संभावनाओं का केंद्र है।

एनआईपीजीआर मेरा आत्मविश्वास

सुवाकांता बारिक (जेआरएफ, 2012)
आईआईटी गांधीनगर, गांधीनगर में तकनीकी अधीक्षक

एनआईपीजीआर से जुड़ी मेरी बहुत सारी यादें हैं। मैं हमेशा एनआईपीजीआर को भारत में पादप विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ और सबसे प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों में से एक मानता हूँ। एनआईपीजीआर में मेरी यात्रा जनवरी 2012 में शुरू हुई जब मैं स्टाफ साइंटिस्ट डॉ. आनंद के. सरकार के साथ जेआरएफ के रूप में शामिल हुआ और उसके बाद अप्रैल 2014 तक एसआरएफ के रूप में काम किया। इस अवधि के दौरान, मुझे अपने शोध समूह (डॉ. श्रद्धा रॉय (आरए), विभव गौतम, कथिक, प्रमोद, अर्चिता, शर्मिला, फुलवंती, बाला और अन्य) और जाहिर तौर पर हमारे मार्गदर्शक डॉ. आनंद सरकार के साथ काम करने में बहुत आनंद आया। हमने अपने शोध आदि में आने वाली समस्याओं का पता लगाने के लिए एक टीम के रूप में काम किया था। मुझे याद है कि हम (विभव और मैं) चिलचिलाती गर्मी में अपने खेत (जहाँ हमने प्रजनन प्रयोग के लिए मक्का और जड़ की विशेषता के लिए चावल उगाया था) पर जाते थे, और फिर मिरिंडा के साथ कैंटीन में बैठकर समोसा खाते थे। हमने मैदान में बाला द्वारा कुछ फोटोग्राफी क्लिक की थी। हम हर शनिवार को सेमिनार में बैठते थे जहाँ हमारे कार्यों का मूल्यांकन किया जाता था। कभी–कभी मुझे विशेष रूप से पांडुलिपि अपलोड करने के लिए गाइड के साथ प्रयोगशाला में रात बितानी पड़ती थी। मुझे डॉ. सरकार का असीम मार्गदर्शन मिला था। उन्होंने हमेशा मुझे मार्गदर्शन और आत्मविश्वास दिया। एनआईपीजीआर न केवल अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनुसंधान संस्थान है, बल्कि इसका परिसर भी सुंदर है और काम करने के लिए एक उपयुक्त स्थान भी है। इससे मुझे बहुत सारी सुखद यादें मिली हैं जिन्हें मैं हमेशा संजोकर रखूंगा। मैं संस्थान से जुड़ी कुछ मधुर यादें यहां संलग्न कर रहा हूँ।

एनआईपीजीआर में मेरी शोध यात्रा

स्नेहा तिवारी (जेआरएफ, 2012)
पीएच.डी. छात्र, आईसीएआर–एनआईपीबी, दिल्ली

मेरा नाम स्नेहा तिवारी है, मैं राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान (एनआईपीजीआर), नई दिल्ली की पूर्व छात्रा हूँ तथा वर्तमान में राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईपीबी), नई दिल्ली में पीएच.डी. स्कॉलर हूँ। मैं एनआईपीजीआर में एक शोध परियोजना में अपनी यात्रा और योगदान को साझा करने के लिए उत्साहित हूँ। मैंने डॉ. मुकेश जैन और रोहिणी गर्ग के मार्गदर्शन में (08 अक्टूबर, 2012 से 20 मई, 2015 तक) नेक्स्ट जनरेशन चौलेंज प्रोग्राम ऑन चिकपी जीनोमिक्स के "चिकपी जीनोम सीक्वेंस एनालिसिस एंड इट्स अलिग्मेंट टू जेनेटिक मैप" नामक डीबीटी परियोजना में एनआईपीजीआर, नई दिल्ली में जेआरएफ के रूप में काम किया था। इस अवधि के दौरान, मैंने प्याज के एपिडर्मल कोशिकाओं में उपकोशिकीय स्थानीयकरण की जांच करने के लिए जीएफपी वेक्टर में चिकपी डीएनए मिथाइलट्रांसफेरेज जीन (डीआरएम1, डीआरएम2 और डीएनएमटी2) को प्रवर्धित और क्लोन किया । मैंने यीस्ट टू–हाइब्रिड विश्लेषण का उपयोग करके चने के मेथिलट्रांसफेरेज प्रोटीन के परस्पर क्रियाशील भागीदार की भी पहचान की। इसके अलावा, मैंने टचडाउन पीसीआर का उपयोग करके विभिन्न तनाव स्थितियों के तहत चने की विभिन्न किस्मों में बहुरूपी एसएसआर मार्कर की भी पहचान की और पावर मार्कर 3 द्वारा एसएसआर डेटा का उपयोग करके फाइलोजेनेटिक वृक्ष तैयार किया। हमारे निष्कर्ष (पीएलओएस वन, इम्पैक्ट फैक्टर– 3.7) https://doA-org/10-1371/journal-pone-0088947 में प्रकाशित हुए थे। इस शोध में भाग लेना एक परिवर्तनकारी अनुभव था जिसने मेरे करियर की दिशा को गहराई से प्रभावित किया। मैं इस पूरी यात्रा में डॉ. मुकेश जैन, डॉ. रोहिणी गर्ग, सहकर्मियों और संस्थान के सहयोग और मार्गदर्शन के लिए आभारी हूँ।

विज्ञान और संचारः भारतीय संस्थानों के विकास की कुंजी

रत्नेश्वर ठाकुर
सीनियर टेक्निकल ऑफिसर (साइंस कम्युनिकेशन्स)
एनआईपीजीआर, नई दिल्ली

मुझे बहुत खुशी है कि राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान (एनआईपीजीआर), नई दिल्ली ने हाल ही में अपने 25 वर्ष पूरे किए हैं और इस अवसर पर स्मारिका में योगदान देने के लिए मैं बहुत गर्वित और उत्साहित हूँ। मैं 14 नवंबर, 2013 से एनआईपीजीआर, नई दिल्ली से जुड़ा हुआ हूँ। वर्तमान में, मैं वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (विज्ञान संचार) के रूप में कार्यरत हूँ। मेरी मुख्य भूमिका एनआईपीजीआर की उपलब्धियों को वैज्ञानिक समुदाय और आम जनता तक प्रभावी ढंग से पहुँचाना और उन्हें लोकप्रिय बनाना है। इसके लिए मैं विज्ञान संचार, विज्ञान लेखन और समाचार पत्रिका संपादन, सोशल मीडिया और विज्ञान–जनसंवाद पहलों के माध्यम से काम करता हूँ। एनआईपीजीआर प्रभावी विज्ञान संचार में सक्रिय रूप से कार्यरत है और नियमित रूप से साइंस आउटरीच कार्यक्रमों, जैसे ओपन डेज, स्टडी टूर, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सवों में प्रदर्शनियाँ इत्यादि, का आयोजन करता है।

विज्ञान और संचार के बीच का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर भारतीय वैज्ञानिक संस्थानों के संदर्भ में। विज्ञान की जटिल और अत्याधुनिक दुनिया को आम जनता तक पहुंचाना और समझाना एक बड़ी चुनौती है। विज्ञान संचार (साइंस कम्युनिकेशन्स) के माध्यम से न केवल वैज्ञानिक जानकारी का प्रसार होता है, बल्कि यह समाज में विज्ञान के प्रति जागरूकता और समझ बढ़ाने में भी सहायक होता है। इस लेख में, विज्ञान संचार की भूमिका, उसके महत्व, और भारतीय संस्थानों के विकास में उसकी केंद्रीय भूमिका पर चर्चा करेंगे।

विज्ञान संचार का महत्व

विज्ञान संचार का मुख्य उद्देश्य है विज्ञान को सरल और सुलभ बनाना। विज्ञान के जटिल सिद्धांतों और शोध को आम जनता, नीति निर्माताओं, और अन्य गैर–वैज्ञानिक समुदायों के लिए समझने योग्य भाषा में प्रस्तुत करना विज्ञान संचार का मुख्य कार्य है। यह न केवल जनता को वैज्ञानिक तथ्यों और खोजों के बारे में जागरूक करता है, बल्कि उनके जीवन में विज्ञान के प्रभाव को भी स्पष्ट करता है।

भारतीय संदर्भ में विज्ञान संचार

भारत एक विविधतापूर्ण और बहुभाषी देश है, जहां विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का संगम है। ऐसे में, विज्ञान संचार का महत्व और भी बढ़ जाता है। विभिन्न भाषाओं और माध्यमों के उपयोग से विज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना संभव हो सकता है। उदाहरण के लिए, हिंदी, तमिल, तेलुगु, बंगाली, और अन्य भाषाओं में विज्ञान संचार को प्रोत्साहित करना आवश्यक है, ताकि अधिक से अधिक लोग विज्ञान के महत्व को समझ सकें और उसका लाभ उठा सकें।

भारतीय वैज्ञानिक संस्थानों की भूमिका

भारतीय वैज्ञानिक संस्थानों का मुख्य उद्देश्य है उन्नत अनुसंधान और विकास कार्य करना। लेकिन, इसके साथ ही उनकी एक और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है – उनके शोध कार्यों और निष्कर्षों को आम जनता तक पहुंचाना। भारतीय वैज्ञानिक संस्थान, जैसे कि भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs), और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR), ब्रिक इंस्टीटूशन्स अंडर डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, विज्ञान संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इन संस्थानों के पास पर्याप्त संसाधन और विशेषज्ञता है, जिससे वे प्रभावी विज्ञान संचार कार्यक्रम विकसित कर सकते हैं।

विज्ञान संचार के माध्यम

विज्ञान संचार के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है। इनमें प्रमुख हैं:

मीडिया: समाचार पत्र, टीवी, रेडियो, और ऑनलाइन समाचार पोर्टल विज्ञान संचार के महत्वपूर्ण साधन हैं। वैज्ञानिक घटनाओं, खोजों, और अनुसंधानों को इन माध्यमों के द्वारा व्यापक जनसमूह तक पहुंचाया जा सकता है।

सोशल मीडिया: आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म विज्ञान संचार के लिए अत्यंत प्रभावी हो सकते हैं।

विज्ञान प्रदर्शनी और मेले: विज्ञान मेले और प्रदर्शनी विज्ञान को आम जनता के करीब लाने का एक रोचक तरीका है। यहां पर लोग प्रत्यक्ष रूप से विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को देख और समझ सकते हैं।

शैक्षिक कार्यक्रम: स्कूलों और कॉलेजों में आयोजित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रम, कार्यशालाएं, और सेमिनार विज्ञान संचार के महत्वपूर्ण साधन हैं। इनसे छात्र और युवा वैज्ञानिक विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझ सकते हैं।

चुनौतियाँ और समाधान

विज्ञान संचार में कई चुनौतियाँ भी हैं। प्रमुख चुनौतियों में से एक है वैज्ञानिक भाषा का सरल रूपांतर करना। वैज्ञानिक लेखन अक्सर तकनीकी और जटिल होता है, जिसे आम जनता के लिए समझना मुश्किल हो सकता है। इसके समाधान के लिए वैज्ञानिकों को संचार विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम करना चाहिए, ताकि जटिल वैज्ञानिक जानकारी को सरल और सुलभ भाषा में प्रस्तुत किया जा सके।

दूसरी चुनौती है विज्ञान संचार के प्रति आम जनता की रुचि बढ़ाना। इसके लिए विज्ञान संचार को रोचक और आकर्षक बनाने की आवश्यकता है। इसके अंतर्गत आकर्षक और इंटरैक्टिव माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि एनिमेशन, इन्फोग्राफिक्स, और वीडियो।

भविष्य की दिशा

भविष्य में, विज्ञान संचार को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए नये और उन्नत तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), वर्चुअल रियलिटी (VR), और ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) जैसे उन्नत तकनीक विज्ञान संचार को और अधिक आकर्षक और प्रभावी बना सकते हैं।

इसके अलावा, विज्ञान संचार के लिए विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक संदर्भों का ध्यान रखना भी आवश्यक है। भारत जैसे बहुभाषी देश में विज्ञान संचार को प्रभावी बनाने के लिए स्थानीय भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

विज्ञान और संचार का मेल भारतीय वैज्ञानिक संस्थानों के विकास की कुंजी है। विज्ञान संचार न केवल वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार में सहायक है, बल्कि यह समाज में विज्ञान के प्रति जागरूकता और समझ बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय वैज्ञानिक संस्थानों को विज्ञान संचार को प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि विज्ञान और समाज के बीच की दूरी कम हो सके और वैज्ञानिक ज्ञान का लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सके।

एनआईपीजीआर विज्ञान संचार और विज्ञान आउटरीच में सक्रिय भूमिका निभाता है, और मुझे गर्व है कि मुझे संस्थान के पहले आधिकारिक विज्ञान संचारक के रूप में इस संस्थान की विज्ञान संचार और आउटरीच पहलों में योगदान करने का अवसर मिला। एनआईपीजीआर की इन पहलों से न केवल विज्ञान को जनता तक पहुँचाया जाता है, बल्कि समाज में विज्ञान के प्रति जागरूकता और रुचि भी बढ़ाई जाती है। इस महत्वपूर्ण कार्य का हिस्सा बनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता और गर्व की अनुभूति हो रही है।

एनआईपीजीआर में मेरे दिन

डॉ. आशुतोष कुमार (पोस्ट डॉक् 2013)

एनआईपीजीआर, नई दिल्ली में रहते हुए मैंने बहुत अच्छा समय बिताया। मैंने अक्टूबर 2013 में डॉ. ए. के. सरकार की लैब में पोस्टडॉक्टरल स्कॉलर के रूप में एनआईपीजीआर में काम करना शुरू किया। मैं ईश्वर का बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे जीवनभर के लिए अच्छे दोस्त दिए। अपने शोध के अलावा, हम विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में हिस्सा लेते थें। हमने खेल आयोजनों और अन्य उत्सवों में भाग लिया। मुझे देर रात की बातचीत की यादें याद हैं जब एक लैब कर्मचारी को अपनी वार्षिक प्रस्तुति में भाग लेना था और फिर चाय के लिए जे.एन.यू. जाना था। हमने नोटबंदी के बाद के समय का भी भरपूर आनंद लिया, जब हम एटीएम के सामने लंबी लाइनों में खड़े होकर हर चीज के बारे में बातें करते थे। मुझे यह भी याद है कि हमने नये ब्लॉक में अपनी प्रयोगशाला को कितनी सावधानी से स्थापित किया था। एक टीम के रूप में, हम अपनी असफलताओं के साथ–साथ अपनी छोटी–छोटी जीतों को भी साझा करते हैं। मुझे हर साल हिंदी पखवाड़ा मनाने में भी बहुत आनंद आता था, मैंने तीन बार हिंदी निबंध प्रतियोगिता जीती है। इसके अलावा, हमारी सालाना प्रयोगशाला यात्राएँ भी होती थीं, जिससे हमें एक–दूसरे से जुड़ने में मदद मिली। कुल मिलाकर, यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा समय था, जिसके दौरान मैंने व्यक्तिगत और प्रोफेशनल दोनों क्षेत्रों में खूब तरक्की की।

अल्मा मेटर एनआईपीजीआर

डॉ. मोहन शर्मा (पीएच.डी. बैच 2013)
पोस्ट–डॉक्टरल वैज्ञानिक,
प्रो. फिलिप विग लैब,
आईजीजेड – लाइबनिज इंस्टीट्यूट ऑफ वेजिटेबल
एंड ऑर्नामेंटल क्रॉप्स थियोडोर–एच्टरमेयर–वेग

प्रिय एनआईपीजीआर पूर्वछात्र टीम,

जब मैं अपने अल्मा मेटर एनआईपीजीआर के बारे में लिखने बैठता हूँ, तो मैं अनेक भावनाओं से अभिभूत हो जाता हूँ और मेरा हृदय कृतज्ञता से भर जाता है। मैं 'प्रयोगशाला के दिनों' को याद करता हूँ जहां आगे की खूबसूरत यात्रा की नींव रखी गई थी; जहां मैंने समर्पण, कौशल और विज्ञान सीखा। मैं एनआईपीजीआर में बिताए अपने दिनों को हमेशा याद रखूँगा। मेरे गुरु के कुशल मार्गदर्शन में अर्जित कौशल ने मुझे अपने समकालीनों से आगे निकलने में मदद की है। ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन और नियमित वैज्ञानिक चर्चाओं ने पीएच.डी. छात्र के रूप में वैज्ञानिक सोच को निखारा। संस्थान में मेरा अनुभव जीवन भर के लिए एक सबक रहा है। एनआईपीजीआर ने मेरे समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह बहुत ही ज्ञानवर्धक और प्रगतिशील कार्यकाल रहा है। मैंने चुनौतियों का सामना करना, सदैव दृढ़ निश्चयी, शांत और संयमित रहना सीखा। सबसे बढ़कर यह कभी न भूलें कि धैर्य का फल मिलता है। मैं सदैव अपने संस्थान, प्रोफेसरों, कर्मचारियों और सहकर्मियों का ऋणी रहूँगा। वे सदैव मेरी यादों में रहेंगे। मैं संस्थान को शुभकामनाएं देता हूँ। मैं कामना करता हूँ कि यह भविष्य में भी फलता–फूलता रहे और नई ऊंचाइयों को छुए।

संक्षेप में कहें तो मैं यही कहूँगा
पुण्य प्रकाशित होता है जैसे अग्रित पापो से!
फूल खिला रहता है असंख्या कांटो के संतापों से!!

एनआईपीजीआर की यादें

डॉ.ज्योतिर्मय मथान (पीएच.डी. बैच 2015)
असिस्टेंट प्रोफेसर इन बॉटनी,
ओडिशा लोक सेवा आयोग (ओपीएससी), ओडिशा

एनआईपीजीआर में बिताए मेरे साढ़े पांच सालों ने मुझे एक बिगिनर से एक कुशल शोधकर्ता में बदल दिया, जिसका श्रेय मेरे मेंटर, दोस्तों और वरिष्ठ सहयोगियों को जाता है। शुरुआती दो वर्षों में स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, एनआईपीजीआर परिवार ने मुझे अस्पताल की कतारों से लेकर देर रात तक रहने के सबसे कठिन समय में सहारा दिया। प्रयोगशाला के सीनियर्स से प्रयोग और तकनीक सीखने से न केवल मेरे वैज्ञानिक कौशल में सुधार हुआ, बल्कि उनके मार्गदर्शन के लिए मेरे अंदर कृतज्ञता की भावना भी पैदा हुई। एनआईपीजीआर ने जीवंत शोध वातावरण और शीर्ष स्तर की सुविधाएं प्रदान कीं, जिससे मैं पांच साल के भीतर बेहतरीन प्रकाशनों के साथ अपनी पीएच.डी. पूरी कर सका और पोस्टडॉक ऑफर हासिल कर लिया। यह सब कुछ सम्मानित संकाय और मेरी लैब (रंजन लैब–204) के मार्गदर्शन के बिना संभव नहीं हो पाता। मेरे घनिष्ठ मित्र मंडली (चाय–समूह), सोमवीर , श्रीनिवास, मनीष, सुनील और विष्णु, दोस्तों से कहीं अधिक हैं – हमने हिमालय की यात्रा की, जैसलमेर में ऊँट की सवारी की, सड़क किनारे ढाबे में देर रात तक पराठे खाएं और जेएनयू में सर्दियों में अलाव जलाए। मैं हमेशा अपने दोस्तों के साथ एनआईपीजीआर में कपास के पेड़ के नीचे बैठना और सुबह–सुबह कोहरे में दौड़ना याद रखूंगा। हालांकि, वैज्ञानिक गतिविधियों और व्यक्तिगत संबंधों के बीच, यह मेरे पर्यवेक्षक, डॉ. आशीष रंजन ही हैं, जो मार्गदर्शन के एक आदर्श के रूप में खड़े रहे, उन्होंने न केवल विज्ञान में, बल्कि जीवन के व्यावहारिक पाठों में भी मेरा मार्गदर्शन किया है। एक अभिवाक और दोस्त की तरह उनका निरंतर सहयोग मुझे मिलता रहा है। पूर्वांचल हॉस्टल में नाश्ता, शाम का समोसा और जन्मदिन समारोहों को याद करते हुए भावनाएँ ताजा हो जाती हैं – यह इस बात का प्रमाण है कि इस जगह और यहाँ के लोगों का मेरे जीवन में बहुत योगदान रहा है। ये यादें मेरे लिए बहुत मायने रखती हैं और इस एलुमनाई समूह समुदाय को धन्यवाद, जिन्होंने एनआईपीजीआर में बिताएं सुखद और दुखद समय को याद करने और उन्हें साझा करने का एक अवसर दिया।

एनआईपीजीरियन होने पर गर्व है !

एनआईपीजीआर में मेरी यात्रा

डॉ.कृति त्यागी (पीएच.डी. बैच 2015)
पोस्टडॉक, यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा, मिनेसोटा, यूएसए

मैंने 2015 में अपनी पीएच.डी. के लिए एनआईपीजीआर जॉइन किया और मेरी यात्रा बहुत खूबसूरत रही। मैं भाग्यशाली थी कि मुझे एक अच्छा मेंटर और बेहतरीन लैबमेट मिले। एनआईपीजीआर में शैक्षणिक और पाठ्येतर गतिविधियों को अत्यधिक प्रोत्साहित किया जाता रहा है, इसी वजह से मैं इन गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती थी। छात्रावास सचिव, मेस सचिव, सांस्कृतिक सचिव जैसी जिम्मेदारियों के साथ, मैंने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया और कई आयोजन समितियों का भी हिस्सा थी। इससे बहुत कुछ नया सीखने को मिला। एनआईपीजीआर ने मुझे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना काम दिखाने का अवसर दिया, जिससे मुझे आत्मविश्वास मिला और मेरे वैज्ञानिक क्षितिज का विस्तार हुआ। यही कारण है कि पीएच. डी. होने के तुरंत बाद मुझे अमेरिका में पोस्टडॉक का पद मिल गया। एनआईपीजीआर में हिंदी भाषा को काफी प्रोत्साहित किया जाता है। मेरी कुछ कविताएँ और लेख संस्थान की हिंदी पत्रिका में प्रकाशित हुई। वहां रहने के दौरान मुझे सर्वश्रेष्ठ हिंदी निबंध के लिए भी सम्मानित किया गया। संस्थान के फैकल्टी और स्टाफ के सदस्यों का व्यवहार बहुत अच्छा था और मैंने अपने बैचमेट्स, जूनियर और सीनियर्स के साथ बहुत यादगार पल साझा किया। इन वर्षों के दौरान एनआईपीजीआर को कुछ बहुत ही कुशल संस्थागत प्रमुखों द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ और उनके साथ काम करना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। कुल मिलाकर, मैं कह सकती हूँ कि एनआईपीजीआर ने मुझे वह इंसान बनाया जो मैं आज हूँ और मैं इसके लिए हमेशा एनआईपीजीआर की आभारी रहूँगी। अंत में, मैं यहाँ अपनी यात्रा के बारे में यही कह सकती हूँ,

'हम अकेले ही चले थे जानिब–ए–मंजिल मगर,
लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया'

एनआईपीजीआर यादों की गलियारों में

डॉ.जूही भट्टाचार्य (पीएच.डी. बैच 2015)
पोस्टडॉक, एलएम कॉलेज एस एंड टी, जोधपुर

मैं निश्चित नहीं हूँ कि कहां से शुरू करूं या सीमित शब्दों में क्या कहूँ क्योंकि मुझे अपने शोध अनुभव, व्यक्तित्व विकास और सुंदर एनआईपीजीआर संस्थान में अन्य गतिविधियों के बारे में बहुत कुछ कहना है। सीएसआईआर–नेट की तैयारी से लेकर एनआईपीजीआर में प्रवेश तक की पूरी प्रक्रिया रोमांचक थी। संस्थान के जीवंत वातावरण ने मेरी शोध क्षमताओं को मजबूत किया और मेरे वैज्ञानिक कौशल को निखारा। इसके अतिरिक्त, मैंने सीखा कि वैज्ञानिक बाधाओं से कैसे निपटना है। मुझे संस्थान की पहली हिंदी पत्रिका में योगदान देकर खुशी हुई। पीएच.डी. अवधि के दौरान वैज्ञानिक प्रशिक्षण मेरे लिए वास्तव में लाभदायक रहा। मैं अपने देश के वैज्ञानिक विकास में योगदान देने और अपने संस्थान को गौरवान्वित करने का वादा करती हूँ। मुझे एनआईपीजीरियन होने पर गर्व है।

मैं एक घटना बताना चाहूँगीः एक दिन कैंटीन जाते समय, मैंने रिसेप्शन क्षेत्र के पास एक व्यक्ति को देखा जिसका चेहरा बहुत जाना–पहचाना था। जिज्ञासावश मैंने उनसे कहा, "आपको कहीं देखा है, सर," और उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "मेरा नाम डॉ. शेखर चिंतामणि मांडे है, मैं सीएसआईआर का महानिदेशक हूँ।" मैं उनके जमीन से जुड़े व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुई। मैंने उन्हें गणतंत्र दिवस के जुलूस के दौरान टेलीविजन पर देखा था। उसके बाद मैंने उन्हें फेसबुक पर फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। उसके बाद हर साल उनके द्वारा मुझे दी गई जन्मदिन की शुभकामनाएँ मुझे सर से मेरी पहली मुलाकात की याद दिलाती है।

मेरी पीएच.डी. टमाटर और तापमान पर केंद्रित है। अपने अध्ययन के दौरान, मैं टमाटर टिशू कल्चर को अनुकूलित करने में काफी कठिनाई का सामना किया। मुझे तीन साल तक प्लांट टिशू कल्चर से कोई परिणाम नहीं मिला। इससे मुझे बहुत तनाव और परेशानी हुई। मेरे गाइड ने मुझे एराबिडोप्सिस परिवर्तन करने का सुझाव दिया, लेकिन मैंने उनसे अनुरोध किया कि मैं टमाटर टिशू कल्चर का काम जारी रखना चाहती हूँ। अपनी उत्तेजना और तनाव से निपटने के लिए टिशू कल्चर का काम करने के बाद मैंने स्केचिंग करना शुरू किया। इस टिशू कल्चर की हताशा ने मुझे इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स धारक, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स धारक का खिताब दिलाया और हार्वर्ड बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के लिए निमंत्रण भी मिला। मैंने डॉ. गगनदीप कांग और डॉ. मौमिता दत्ता जैसे प्रमुख वैज्ञानिकों का पहला कैरिकेचर भी बनाया और उनकी ओर से इसकी सराहना भी की गई। अंततः, पांचवें वर्ष की शुरुआत में, मुझे टमाटर के ट्रांसजेनिक बच्चे प्राप्त हुए और मैंने शीघ्रता से ट्रांसजेनिक लाइनों के साथ शेष विश्लेषण किया। उस दिन मैं बहुत खुश थी क्योंकि मेरी कड़ी मेहनत रंग लायी थी। प्रयोग और अनुसंधान करते समय अपने अंतर्ज्ञान पर भरोसा करना महत्वपूर्ण है। फिर जादू होगा। अंततः, एनआईपीजीआर में छह साल की यात्रा उल्लेखनीय रही। मेरे पास साझा करने के लिए बहुत सी बातें हैं, लेकिन शायद फिर कभी। धन्यवाद।

प्रिय एनआईपीजीआर

डॉ.विशाल वार्ष्णेय (पीएच.डी. बैच 2015)
असिस्टेंट प्रोफेसर, एसजी कॉलेज, चारामा

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लांट जीनोम रिसर्च (एनआईपीजीआर) में पीएच.डी. के दौरान, मैंने एक अत्यंत समृद्ध और परिवर्तनकारी यात्रा का अनुभव किया। एनआईपीजीआर पादप अनुसंधान में उत्कृष्टता का प्रतीक है, जो बौद्धिक रूप से अनुकूल वातावरण प्रदान करता है, एवं शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है। संस्थान की अत्याधुनिक सुविधाओं और प्रौद्योगिकियों ने मुझे अपने शोध को बेहतर करने में सक्षम बनाया, तथा जीनोमिक्स और जैव प्रौद्योगिकी में उन्नत पद्धतियों का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया। आकर्षक चर्चाएं, सहयोगात्मक परियोजनाएं और रचनात्मक प्रतिक्रिया मेरे दैनिक अनुभव की आधारशिला रही हैं, जिन्होंने मेरे शोध को आगे बढ़ाया हैं और मेरी आलोचनात्मक सोच कौशल को निखारा हैं।

पीएच.डी. के दौरान, मेरा अनुभव न केवल अकादमिक रूप से समृद्ध था, बल्कि जीवंत छात्रावास जीवन के कारण व्यक्तिगत रूप से भी संतुष्टिदायक था। छात्रावास सचिव के रूप में मुझे विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों के आयोजन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिससे वहां रहने वाले लोगों में सामुदायिकता और सौहार्द की भावना बढ़ी। छात्रावास सिर्फ रहने की जगह से कहीं अधिक था; यह सामाजिक संपर्क, आराम करने और मनोरंजन का केंद्र था।

हमारे छात्रावास जीवन का एक मुख्य आकर्षण सांस्कृतिक और खेल आयोजन थे जो हमने पूरे वर्ष आयोजित की थी। छात्रावास सचिव होने के कारण मुझे अपने नेतृत्व और संगठनात्मक कौशल को विकसित करने का अवसर मिला, क्योंकि मैं कार्यक्रमों के सुचारू निष्पादन को सुनिश्चित करने के लिए साथी छात्रों, शिक्षकों और प्रशासनिक कर्मचारियों के साथ समन्वय स्थापित करने के लिए जिम्मेदार था। इन आयोजनों का उत्सुकता से इंतजार किया जाता था और सभी उत्साहपूर्वक इसमें भाग लेते थे। क्रिकेट और बैडमिंटन टूर्नामेंट से लेकर शतरंज और कैरम प्रतियोगिता तक, हर खेल प्रेमी के लिए कुछ न कुछ था। ये गतिविधियां न केवल हमारे शैक्षणिक कार्यक्रम से एक आवश्यक ब्रेक प्रदान करती हैं, बल्कि हमें मजबूत बंधन और टीम भावना बनाने में भी मदद करती हैं।

सांस्कृतिक संध्याएँ छात्रावास जीवन का एक और महत्वपूर्ण पहलू थीं। ये शामें संगीत, नृत्य और नाटक प्रदर्शनों से भरी होती थीं, जिनमें छात्रों की विविध प्रतिभाएँ प्रदर्शित होती थीं। गणपति पूजा, सरस्वती पूजा, दिवाली, होली और क्रिसमस जैसे त्यौहार सजावट, पारंपरिक संगीत और स्वादिष्ट भोजन के साथ बड़े उत्साह के साथ मनाए गए, जिससे घर जैसा माहौल बन गया।

मुझे रिसर्च स्कॉलर द्वारा आयोजित वार्षिक कार्यक्रम "साइफ्लक्स सिम्पोजियम" के संयोजक और सह–संयोजक के रूप में सेवा करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह संगोष्ठी शैक्षणिक वर्ष का एक मुख्य आकर्षण थी, जो छात्रों को अपने शोध

निष्कर्ष प्रस्तुत करने, विचारों का आदान–प्रदान करने और पादप जीनोमिक्स के क्षेत्र में साथियों और विशेषज्ञों के साथ जुड़ने के लिए एक गतिशील मंच प्रदान करती थी। औपचारिक वैज्ञानिक सत्रों के अतिरिक्त, हमने "रेनबो" नामक कई अनौपचारिक नेटवर्किंग कार्यक्रम भी आयोजित किए, जिनमें स्वागत समारोह और सामाजिक कार्यक्रम शामिल हैं। ये सम्मेलन प्रतिभागियों के बीच संबंधों को बढ़ावा देने, सहयोग को प्रोत्साहित करने और एनआईपीजीआर के भीतर सामुदायिक भावना का निर्माण करने में सहायक थे।

सादर,

निष्कर्ष रूप में, एनआईपीजीआर में मेरा समय शैक्षणिक शिक्षा और जीवंत छात्रावास जीवन का एक आदर्श मिश्रण था। छात्रावास सचिव के रूप में जिन मनोरंजक गतिविधियों और कार्यक्रमों में मैं शामिल हुआ, उनसे न केवल मेरा व्यक्तिगत अनुभव समृद्ध हुआ, बल्कि वहां रहने वाले लोगों में सामुदायिक भावना का निर्माण करने में भी मदद मिली। कड़ी मेहनत और मौज–मस्ती के इस संतुलन ने एनआईपीजीआर में मेरी पीएचडी यात्रा को सचमुच अविस्मरणीय बना दिया।

एनआईपीजीआर

डॉ. कुमुद सैनी (पोस्ट डॉक् 2017)
रिसर्च एसोसिएट, एसएलसीयू, कैम्ब्रिज

संस्थान के पूर्व स्कॉलर के रूप में मेरा अनुभव अत्यधिक सकारात्मक रहा है। इस माहौल ने कार्य–जीवन के बीच अच्छा संतुलन स्थापित किया, जिससे मुझे शैक्षणिक रूप से आगे बढ़ने का अवसर मिला और साथ ही जीवन के छोटे–छोटे पलों को जीने का भी मौका मिला। एक मेंटर के रूप में डॉ. आशीष रंजन ने मेरी पूरी यात्रा में अमूल्य मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया, मेरे लिए एक बहुत ही सकारात्मक अनुभव साबित हुआ है। प्रयोगशाला की बैठकों के दौरान उत्कृष्ट वैज्ञानिक चर्चाओं में शामिल होने से लेकर अपने सहकर्मियों के साथ पीआईएफ एक्सप्रेशन के समय के बारे में बातचीत मेरी स्मृति में अंकित है। सेंट्रल इंस्ट्रूमेंटेशन फैसिलिटी और ओपन वर्क कल्चर ने विभिन्न शोध समूहों के बीच साझा सीखने और सहयोग को प्रोत्साहित किया, जो किसी भी कार्यस्थल के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से विज्ञान में। परिसर की अतिरिक्त मौसमी सुन्दरता ने बौद्धिक विकास के लिए उत्कृष्ट परिवेश प्रदान किया। कुल मिलाकर, संस्थान में बिताया गया मेरा समय प्रोफेशनल विकास और व्यक्तिगत आनंद का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण था और इसके लिए मैं वैज्ञानिक, बागवानी और प्रशासनिक टीमों को धन्यवाद देती हूँ।

एनआईपीजीआर से आईआरआरआई तक खोज की जड़ें

फ़राज़ अजीम (जेआरएफ, 2018)
पीएच.डी.,आईआरआरआई, लॉस बाओस, फिलीपींस

एनआईपीजीआर में मेरी यात्राः एक समृद्ध शोध कैरियर की नींव

मुझे नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लांट जीनोम रिसर्च (एनआईपीजीआर) के अपने समृद्ध अनुभव को साझा करने में खुशी हो रही है, एक ऐसा स्थान जिसने मेरी वैज्ञानिक यात्रा को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया। मेरा नाम फराज अजीम है, और मैं वर्तमान में इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईआरआरआई), लॉस बानोस, फिलीपींस में अपनी पीएच.डी. कर रहा हूँ।

अनुसंधान फोकस और योगदानः

आईआरआरआई में, मैंने दो–लाइन और तीन–लाइन हाइब्रिड चावल (ओरिजा सैटिवा एल) में हेटेरोसिस के आनुवंशिकी, आणविक और एपिजेनेटिक नियमों को समझने की कोशिश कर रहा हूँ। अनुसंधान का यह क्षेत्र चावल की पैदावार में सुधार लाने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है, जो मेरे दिल के बहुत करीब है। एनआईपीजीआर में मेरी अधिकांश शोध गतिविधियां विकासात्मक जीव विज्ञान, पोषक तत्व संवेदन, जीनोम संपादन और उन्हें पुष्ट करने के लिए संबंधित दृष्टिकोण को समझने के लिए समर्पित थीं।

मेंटरशिप और प्रमुख अनुभवः

एनआईपीजीआर में मेरे कार्यकाल का एक महत्वपूर्ण पहलू डॉ. अमर पाल सिंह के साथ काम करने का अवसर था। उनका मार्गदर्शन प्रेरणादायक था, उन्होंने मुझे जटिल प्रयोगों में मार्गदर्शन दिया तथा अनुसंधान के प्रति अनुशासित दृष्टिकोण विकसित करने में मदद की। डॉ. सिंह ने धैर्य, परिश्रम और निरंतर सीखने के महत्व पर जोर दिया। हमेशा उच्च प्रभाव वाले साहित्य से जुड़े रहने की उनकी सलाह और शिक्षण के प्रति उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण अमूल्य रहा है। डॉ. सिंह के साथ काम करते हुए मुझे लगा कि हमारा अनुसंधान, विशेष रूप से विकासात्मक जीव विज्ञान के क्षेत्र में, अग्रणी था। हमारे काम की सहयोगात्मक प्रकृति और मुझे प्राप्त व्यावहारिक मार्गदर्शन मेरे शोध कौशल को निखारने में सहायक रहे। ये अनुभव न केवल शिक्षाप्रद थे बल्कि अत्यंत प्रेरणादायक भी थे। एनआईपीजीआर में इस फाउंडेशन ने मुझे पीएच.डी. की पढ़ाई के लिए अच्छी तरह से तैयार किया। वर्तमान में, मुझे आईआरआरआई में डॉ. जौहर अली के साथ काम करने का सौभाग्य मिला है, जो एक प्रसिद्ध प्लांट ब्रीडर और चावल

चित्र.1: एनआईपीजीआर टीम, 2018

अनुसंधान के विशेषज्ञ हैं। डॉ. अली का मार्गदर्शन मेरे सतत् शैक्षणिक और प्रोफेशनल विकास का आधार रहा है। मैं अपनी माँ कमर जहां और मेरी एमएस सलाहकार प्रोफेसर वाई. विमला का भी आभारी हूँ, जिनका समर्थन और मार्गदर्शन मेरे शुरुआती शोध करियर के दौरान महत्वपूर्ण रहा।

चित्र 2: डॉ. अली के साथ अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान का क्षेत्रीय दौरा, 2023

टर्निंग ट्यून्स और कृतज्ञता: मेरे सफर के दौरान दो क्षण जीवन बदलने वाले रहेरू जूनियर रिसर्च फेलो (जेआरएफ) पद के लिए डॉ. अमर का बुलावा और डॉ. जौहर अली का पीएच.डी. स्वीकृति ईमेल। इन अवसरों ने महत्वपूर्ण मील के पत्थर स्थापित किये तथा अविश्वसनीय शिक्षण अनुभवों के द्वार खोले। मैं सम्पूर्ण एनआईपीजीआर समुदाय के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। उनके द्वारा प्रदान किया गया सहायक वातावरण और असाधारण शोध मंच एक वैज्ञानिक के रूप में मेरे विकास के लिए महत्वपूर्ण रहा है। मैंने वहां जो दोस्ती और पेशेवर रिश्ते बनाए हैं, वे मुझे प्रेरित और सहयोग करते हैं।

निष्कर्ष: एनआईपीजीआर में बिताए अपने समय पर विचार करते हुए, मुझे प्राप्त अनुभवों और ज्ञान के लिए असीम कृतज्ञता महसूस होती है। डॉ. सिंह और एनआईपीजीआर के अन्य लोगों से मिले मार्गदर्शन और कठोर प्रशिक्षण ने मेरे करियर पथ को गहराई से प्रभावित किया है। मैं कृषि अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए, विशेष रूप से चावल आनुवंशिकी और प्रजनन में, जो कुछ मैंने सीखा है उसे लागू करने के लिए उत्सुक हूँ।

धन्यवाद,

एनआईपीजीआर एक असाधारण कार्यस्थल

रीना अरोड़ा

एनआईपीजीआर में अपने प्रवास पर विचार करते हुए मैं कृतज्ञता और सुखद यादों से भर जाती हूँ। मैं रीना अरोड़ा हूँ, और मुझे एनआईपीजीआर में छह महीनों के लिए जूनियर रिसर्च फेलो के रूप में काम करने का सौभाग्य मिला। डॉ. जगदीश गुप्ता कपुगंती के मार्गदर्शन में उनकी प्रतिष्ठित प्रयोगशाला में, मैंने जो अनुभव किया, मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि ये मेरे करियर के सबसे उल्लेखनीय और परिवर्तनकारी महीने थे।

अपने कार्यकाल के दौरान, मुझे प्लांट बायोटेक्नोलॉजी के विभिन्न पहलुओं को गहराई से जानने का अवसर मिला, जिससे मुझे प्लांट ग्रोथ तकनीक, रखरखाव और जेनेटिक इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में अमूल्य ज्ञान प्राप्त हुआ। डॉ. कपुगंती के मार्गदर्शन ने मेरी यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि प्रशिक्षण अवधि के दौरान मैं अपनी सीखने की क्षमता को अधिकतम कर सकूं। उनके मार्गदर्शन में, मुझे गहन ज्ञान और अमूल्य शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला, जिसने मेरे प्रोफेशनल विकास में बहुत योगदान दिया है।

एनआईपीजीआर एक असाधारण कार्यस्थल है, जिसका मुख्य कारण यहाँ के वैज्ञानिकों का अटूट समर्थन और विशेषज्ञता है। सहायता करने और ज्ञान साझा करने की उनकी इच्छा एक सहयोगात्मक वातावरण को बढ़ावा देती है जो विकास और नवाचार के लिए अनुकूल है। पहले छह महीनों में ही मुझे यह स्पष्ट हो गया कि एनआईपीजीआर ही वह जगह है जहां से मुझे पीएच.डी. करनी है, क्योंकि शोध के प्रति मेरा जुनून और शैक्षणिक गतिविधियों के लिए यहाँ अनुकूल माहौल था।

एनआईपीजीआर में मेरे कार्यकाल का एक मुख्य आकर्षण पोर्टेबल फोल्डस्कोप को डिजाइन करने में हमारा सामूहिक प्रयास था, यह एक ऐसी परियोजना थी जिसका उद्देश्य कम सुविधा प्राप्त पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए माइक्रोस्कोपी को सुलभ बनाना था। जब मैंने अपने काम के प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से देखा, जिसमें हमने अनगिनत स्कूली छात्रों को माइक्रोस्कोपी का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने में मदद की, तो मुझे अत्यंत संतुष्टि का अनुभव हुआ।

मैं खुद को सचमुच सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे एनआईपीजीआर का हिस्सा बनने और डॉ. जगदीश गुप्ता कपुगंती के मार्गदर्शन में काम करने का अवसर मिला। उनके मार्गदर्शन ने न केवल मेरे वैज्ञानिक ज्ञान को समृद्ध किया, बल्कि हमारे जीवन में विज्ञान के महत्व के प्रति मेरी गहरी समझ भी पैदा की।

यहाँ मैंने अमूल्य संबंध और मित्रताएं बनाईं, जिससे एनआईपीजीआर दूसरे घर जैसा महसूस होने लगा। स्वच्छता, स्वास्थ्य और सकारात्मकता के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता ने समग्र अनुभव को और बेहतर बनाया।

इसके अलावा, मैं एनआईपीजीआर में अपनी कार्यकाल के दौरान अपने सभी सम्मानित प्रयोगशाला साथियों के अटूट समर्थन और सौहार्द के लिए उनका हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। उनके प्रोत्साहन और सहयोग ने मेरे अनुभव को

वास्तव में समृद्ध और यादगार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

एनआईपीजीआर में बिताए अपने समय को याद करते हुए मुझे पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। संस्थान के उत्साहवर्धक माहौल और सौहार्द ने मुझ पर एक अमिट छाप छोड़ी है, और मैं उन यादों को बहुत संजोकर रखती हूँ।

जबकि मैं अपने करियर में एक नया अध्याय शुरू कर रही हूँ, मैं एनआईपीजीआर में अपने कार्यकाल के दौरान प्राप्त समृद्ध अनुभवों और सार्थक संबंधों को याद किए बिना नहीं रह सकती। मैं ऐसे गतिशील और प्रतिष्ठित संस्थान का हिस्सा बनने के अवसर के लिए बेहद आभारी हूँ।

आपके अमूल्य मार्गदर्शन और समर्थन के लिए एक बार पुनः धन्यवाद। मैं आपकी और एनआईपीजीआर के सभी लोगों की बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी प्रोफेशनल यात्रा को इतने गहन तरीके से आकार दिया।

यदि मुझे अवसर मिले, तो मैं अपने शोध प्रयासों के लिए एनआईपीजीआर में वापस लौटने के अवसर को पूरे दिल से स्वीकार करूंगी, तथा वैज्ञानिक समुदाय में सार्थक योगदान देने तथा एक उज्ज्वल भविष्य को आकार देना चाहूँगी।

जब मैं एनआईपीजीआर में बिताए अपने समय को याद करती हूँ, तो मुझे अपने मार्गदर्शक डॉ. कपुगंती और मेरे सभी सम्मानित वरिष्ठों द्वारा मुझे दिए गए सौहार्द, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन की याद आती है। उनके प्रभाव ने मेरी यात्रा पर एक अमिट छाप छोड़ी है, जिसने मुझे आज एक शोधकर्ता के रूप में आकार दिया है।

मतदाता जागरूकता

डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पुस्तकालयाध्यक्ष सह प्रलेखन अधिकारी

भारतीय लोकतंत्र की परंपरा को भूल न जाना।
लोकसभा के चुनाव में मतदान जरूर करके आना।।
समझो अपने वोट की ताकत जिससे सरकार बनती।
ईमानदार और स्वच्छ छवि के उम्मीदवार को जिताना।।
यदि हम सब जागरूक हुए तो भारत आगे बढ़ेगा ।
अपने वोट की ताकत को अवश्य समझ जाना।।
हमारे देश का भविष्य टिका चुनी हुई सरकारों पे।
देश के विकास की खातिर सही उम्मीदवार जिताना ।।
सभी उम्मीदवार अपने अपने तरह के वादे करते।
किंतु आप हो समझदार किसी झांसे में ना आना।।
आपके मतदान करने से बनती बिगड़ती सरकारें।
अपने वोट की कीमत समझो सही जगह डाल कर आना।।
देश तरक्की कर रहा नित दिन यह वोट का असर है।
मतदान है राष्ट्रीय कर्तव्य तुम इससे जी ना चुराना।।
मतदान है भारतीय लोकतंत्र का पर्व इसे मनाना।
आने वाली संतानों के हित के लिए वोट डालकर आना।।

दोस्ती मे

डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पुस्तकालयाध्यक्ष सह प्रलेखन अधिकारी

दोस्ती में कोई गिला शिकवा न होना चाहिए।
ये दिल की बात है दिल से ही सुनना चाहिए।।
दुनिया को तालीम देते रहते हैं इंसानियत की।
वक्त निकाल उन्हें खुद में झांक लेना चाहिए।।
जिंदगी की कशमकश में खुद को ही भुला बैठे ।
बहुत गई थोडी बची खुद को वक्त देना चाहिए ।।
क्या साथ लेकर आये यहां क्या साथ ले जायेंगे।
झूठ धोखा छल फरेब सबसे बच के रहना चाहिए ।।
हर किसी में है हुनर कोई भीतर छुपा हुआ।
ढूंढने के वास्ते नजर पारखी की चाहिए ।।
जो सपने में भी न सोचा था वो ख्वाब सच हुआ।
लाइनें लिखने लगा लोगों ने इतना प्यार दिया।।
सोचने बैठता हूँ क्या उनका ऋण चुका पाऊंगा ।
जिनकी दुआ ने फर्श से फलक पे बैठा दिया।।
मंजिल की राह में सहारा देने वालों को कैसे भुलाऊं।
सर उनके सम्मान में झुकता जिन्होंने मौका दिया।।

अनोखा हुनर (हास्य कविता)

रजनी असवाल
अनुभाग अधिकारी

वैसे तो हुनर हैं कई उनमें
कहें तो हुनर की खान है वो
पर एक हुनर है बेमिसाल
जिससे हुए है हम बेजुबान
यह खुदा का वरदान है
कि इसमें हमारा ही योगदान है
समझ नहीं पा रहे हम अब तक
और सुने जा रहे सब चुप रह कर
आज बच्चों ने कुछ पौष्टिक खाया नहीं
तो माँ ने बचपन में कुछ सिखाया नहीं
आज बच्चों ने कमरा सजाया नहीं
तो माँ ने सलीका सिखाया नहीं
बच्चा जब कुछ हासिल कर ले , तो उसका जुनून
वरना सौ फी सदी आपका कुसूर
हजार दफा बताने पर भी बात अगर सुनी नहीं
तो हमने ठीक से बताई नहीं
यहाँ तक कि गाड़ी खराब होने पर भी
हमारी ही काबलियत दाव पर लगाई गई
हॉउस मेड की तमाम लापरवाईयाँ भी
हमारी ही गलतियों की फेहरिस्त में शामिल की गई
घर में मछरों का उतपात हो
या हो मखियों का सैलाब
हमारी ही किसी आदत पर
लगाया गया इसका इल्जाम
कैसे हर इल्जाम से बचे हम
बस यह सोच कर चुप रह गए हम
कि शुक्र है कि मौसम के बदलने का इल्जाम
अभी भी खुदा पर है
देखें इससे कब तक बच कर रह सकें हम ।

कृपया थोड़ा चुप हो जाएं (हास्य कविता)

रजनी असवाल
अनुभाग अधिकारी

यह नहीं है कि बोलना एक गुनाह है
पर यह क्या बात हुई कि चुप होना ही भूल गए
वैसे तो आप बातें सारी अच्छी ही करते हैं
पर चुप रहना भी एक हुनर है
वह अगर किसी तरह आप थोड़ा सीख पाएं
कृपया थोड़ा चुप हो जाएं ।

मौसम में प्रतिदिन नया रंग है
पशु – पक्षी का गुन–गुनाना भी संग संग हैं
पेड़ पत्ते भी हवा में सर सरा रहे हैं
सब मिल कर एक नया दृश्य दिखा रहे हैं
इनसे भी कभी–कभी रुबरु हो जाएं
कृपया थोड़ा चुप हो गाएं ।

हर आदमी है कुछ न कुछ सोच रहा
सभी के मन में कोई न कोई विचार उमड़ रहा
सभी के पास कुछ न कुछ समस्या है
उनका निपटान पहले हो जाए
कृपया थोड़ा चुप हो जाएं ।

हर किसी की जिंदगी है किस्सों से भरी हुई
अपने ही मसलों में उलझी पड़ी
सब की अपनी ही तरह से जिन्दगी है कट रही
पहले अपने ही क्यों न कुछ मुद्दे सुलझाए जाएं
कृपया थोड़ा चुप हो जाएं ।

दुनियां में है किताबों का अम्बार पड़ा
अब तो सारी जानकारी भी इन्टरनेट पर मिल रही
क्यों न खुद को उनसे जोड़ कुछ नया ज्ञान उनसे पाएं
कृपया थोड़ा चुप हो जाएं ।

क्यों है इंसान हमेशा दूसरों को देख रहा
दूसरों को जानने की क्यों हमेशा कोशिश कर रहा
एक ही जीवन है अपना, उसे क्यों नहीं निहार रहा
आओ थोड़ा खुद से ही बातें हो जाएं
थोड़ी देर के लिए ही सही
कृपया थोड़ा चुप हो जाएं ।

In the heart of New Delhi

Dr. Siddhi Jalmi (Ph.d. Batch 2010)

In the heart of New Delhi, where dreams take flight,
Stands NIPGR, a beacon of light.
Six years of learning, growth, and grace,
In a nurturing haven, a special place.

Under the guidance of a mentor wise,
Dr. Sinha's knowledge, a treasure prized.
MAPK cascades and pathogen's plight,
In rice fields' whispers, we found insight.

Labmates like family, both old and new,
Together we ventured, together we grew.
Through laughter and parties, in the hostel's embrace,
We found joy and friendship in every space.
Far from home, yet never alone,
NIPGR's warmth, a love well-known.

Celebrating milestones, twenty-five years strong,
In unity and knowledge, we all belong.
Cheer's to NIPGR, a gem so rare,
With memories and moments beyond compare.
A family of scholars, where dreams ascend,
Forever grateful, our hearts will blend.

****

राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान

अरुणा असफ अली मार्ग
नई दिल्ली- 110067

www.nipgr.ac.in @nipgr @NipgrSocial